Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

आर्य जनता का राजनीतिक प्रकाशन

वर्ष २ अक्टूबर १९६२ अंक २

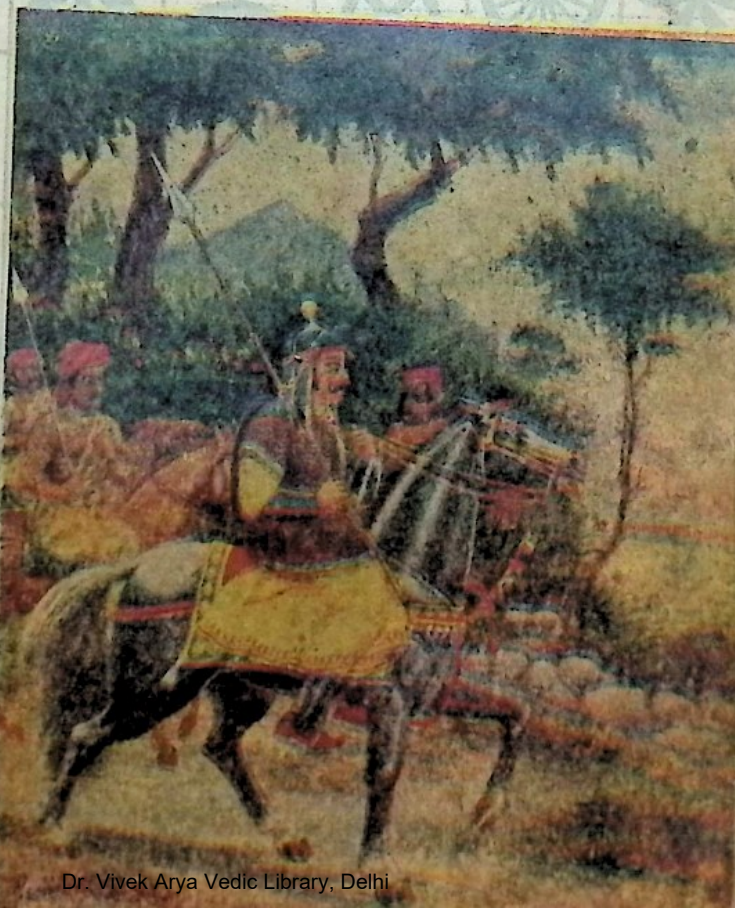

वार्षिक मूल्य
६)
एक प्रति
५० पैसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० पं० भगवद्दत्त जी

पिछले दिनों दिल्ली में लम्बी बीमारी के बाद आपका देहान्त हो गया। आपने जीवन भर वेद, इतिहास भाषा-विज्ञान के आधार पर वैदिक वाङ्मय का संदेश देश विदेश में पहुंचाया।

'जन-ज्ञान' दिवंगत के चरणों में हार्दिक श्रद्धा-सुमन अर्पित कर उनके मा पर चलते रहने के लिए कृत-संकल्प है। ——संपाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धरती के प्रत्येक मानव के हृदय मंदिर पर
वेद ज्ञान की पावन पताका फहराने के लिए कृतसंकल्प
आर्य जनता का अपना प्रतिनिधि प्रकाशन

जन-ज्ञान (मासिक)

वार्षिक मूल्य ६)
एक प्रति का ५० पैसे
संपादक-राकेश रानी

वर्ष १ | १५ जनवरी १९६९ | अंक ९

विजय हमारी होगी

●

भारत की पावन स्वतन्त्रता पर,
संस्कृति, धर्म और परम्परा पर,
असुर दल काल बन मंडराया है,
चारों ओर निराशा असंतोष छाया है।

क्या होगा, कैसे होगा भविष्य का,
सोचने वालो, डरो नहीं,
दयानन्द के सिपाही अभी जीवित हैं।
भारत मां की स्वतन्त्रता रक्षा हित,
एक बार फिर बलदान देने के लिए,
आर्य वीरों के अंतर में जोश जागा है।

एक हाथ में 'शस्त्र' एक में 'वेद' लेकर,
हम बढ़ेंगे, मरेंगे पर पीछे नहीं हटेंगे।
यह निश्चय है विजय हमारी होगी,
क्योंकि सत्य हमारे साथ है।

—भारतेन्द्र नाथ—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोरक्षा की मांग अपराध

श्री भारतेन्द्रनाथ को ७ दिन की कड़ी सजा या ५००) जुर्माना

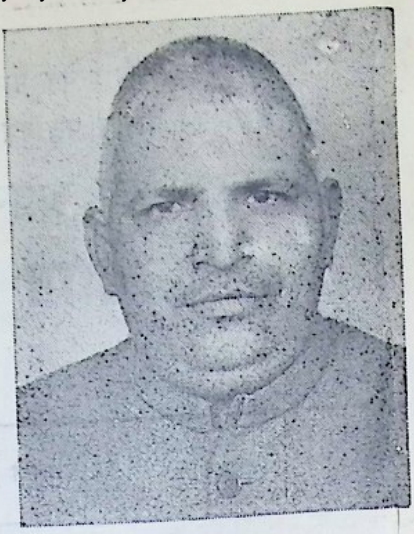

★

'जन-ज्ञान' के पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि भारत सरकार की दृष्टि में गोरक्षा की मांग करना आज भी गम्भीर अपराध है। क्योंकि १८ दिसम्बर को दिल्ली के प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट श्री जे. के. दीक्षित ने अपने एक निर्णय द्वारा पं० भारतेन्द्रनाथ को ७ दिन की कड़ी कैद या ५००) अर्थ दंड सुना कर दंडित किया।

सभी को यह ज्ञात ही होगा कि दिसम्बर १९६६ में श्री पं० भारतेन्द्र नाथ जी ने कुछ पोस्टर गोरक्षा के सम्बंध में प्रकाशित किए थे। जिनमें से एक का शीर्षक था "कसाई की छुरी के नीचे कटती गाय रक्षा के लिए आपको पुकारती है।"

इस पोस्टर को प्रकाशित करने के अपराध में १५ दिसम्बर १९६६ को पंजाब सुरक्षा कानून के अन्तर्गत पं० भारतेन्द्र नाथ को गिरफ्तार किया गया था। तभी से यह केस निरन्तर चलता रहा। ५० से अधिक पेशियां इस केस में लगीं। और २ वर्ष तक निरन्तर केस चलाने के बाद माननीय मजिस्ट्रेट महोदय ने उक्त निर्णय सुनाया। इसी निर्णय में पोस्टर में छापने वाले प्रभात प्रेस के स्वामी श्री विनोदकुमार को भी यही दंड दिया गया।

इस निर्णय ने एक बार फिर यह प्रमाणित कर दिया कि गोरक्षा की समस्या आज भी उतनी ही उलझी हुयी है जितनी ब्रिटिश शासन में थी। भारत मां का भाग्य आज भी उसी तरह सिसक रहा है। आर्य रक्त से वीरता विदा हो गयी प्रतीत होती है अन्यथा ४५ कोटि व्यक्तियों की माता प्रतिदिन सुबह सूर्य की किरणें निकलने से पहले ही हजारों की संख्या में न कट जाती।

काश कि कुछ सच्चे आर्य आज भी गम्भीरता पूर्वक स्थिति पर विचार करते और अपने स्वार्थ के लिए नहीं—गो-माता के प्राण बचाने के लिए रचनात्मक पग उठाते! हम सार्वदेशिक सभा के मंत्री ला. रामगोपाल संसद् सदस्य के आभारी हैं जिन्होंने आरंभ से अंत तक सम्पूर्ण केस में व्यक्तिगत रुचि ली। श्री सोमनाथ मरवाहा एडवोकेट, श्री बी. एस. छिब्बर, श्री बलजीत सिह, श्री सुदर्शनकुमार मल्ला और श्री लवदेव अरोड़ा ने पूरी शक्ति से केस की पैरवी की, उनका धन्यवाद करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। निर्णय के विरुद्ध सैशन कोर्ट में अपील दायर कर दी गयी है। देखिए क्या होता है?

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

आओ मृत्यु से टकरायें

मृत्यु आ रही है, उससे बचना है तो डरो नहीं, टकराने की तैयारी करो। साहस से बढ़ो और लड़ो। तूफान की लहरों के सामने चट्टान बन कर खड़े रहना ही जीवन का ज्योतित मार्ग है।

हारो नहीं हिम्मत, तुम वीर हो तो काल की गति बदल सकते हो। समय की राह बदलना ही तो आज प्रकाश की किरणों के स्वागत की तैयारी की सीधी राह है।

सोते-सोते देर हो गई, अब तो समय नहीं रहा। सर्वनाश द्वार पर आ पहुंचा है, दरवाजे पर उसकी पदचाप सुनाई पड़ने लगी है। उसका स्वागत करना है या उसकी चुनौती स्वीकार कर अस्त्र सँभाल उसका संहार करना है ? दो में से एक मार्ग तो आपको चुनना ही होगा। पहला चयन मृत्यु का निमन्त्रण और दूसरा जीवन की राह प्रशस्त करेगा।

क्या चाहते हैं आप ? यह हमारा प्रश्न है और उत्तर देंगे वे, जिनमें स्वाभिमान शेष है। आत्मविस्मृति के क्षण अधिक नहीं रह सकते। शंखध्वनि सुनकर नींद टूटना सब कुछ बचा लेगा।

कायर मत बनो, सिंहों की सन्तानों ! अपने स्वरूप को पहचानो। जीवन के मोह में पथभ्रष्ट मत बनो। यह तो नष्ट होगा ही, फिर क्यों न कर्तव्य-पालन के लिए जूझते हुए मृत्यु के वरण की तैयारी करो।

मृत्यु का स्वागत ही उसकी समाप्ति का अमोघ अस्त्र है। प्राण-प्राण में जीवन के स्वर गुंजाने हैं, तो प्राणों का मोह त्यागना होगा। प्रलय आ रही है तो उससे टकराना होगा—दृढ़ता से, धीरज से, उद्दाम उमंग से। काल को ठोकर मार कर अपनी राह बनानी होगी।

हमें प्रतीक्षा है ऐसे बलिदानियों की जो प्रभु के सच्चे पुत्र हों। अपने को जानते हों, अपनी शक्ति पहचानते हों। समय के साथ बहने वाले नहीं। समय को बदलने की चाह हृदय में रखने वाले, लक्ष्य के लिए मर मिटने वाले, असुर दल को सत्य की हुंकार से कम्पित करने की सामर्थ्य वाले सच्चे वीरों की।

वीर ! उठो !! रणभेरी बज रही है, शत्रु दल चुनौती दे रहे हैं, समय बीतता जा रहा है, काल समीप आ रहा है·····उठो ! जागो ! दयानन्द के वीर अनुयायी जागो, काल से लड़ने की तैयारी करो।

यह समय की पुकार है। रणभेरी का आह्वान और जीवन की साधना है। सत्य-धर्म और मानवता का प्रसार आज हम सभी से बलिदान की अपेक्षा कर रहा है।

स्वराज्य को सुराज्य बनाने का यही मार्ग है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम यह कहना चाहते हैं—

● भारतेन्द्रनाथ

विजय तुम्हारी बाट देख रही है

●

महर्षि दयानन्द के स्वप्नों का संसार बनाने का हमारा संकल्प आज का नहीं है। बचपन में माँ की लोरियों में हमने जो गीत सुने थे उनमें भी यही ध्वनि थी, ऐसा हमारा विश्वास है, किन्तु स्पष्टतया तो गुरुकुल से विदा होते हुए दीक्षान्त भाषण के पश्चात् हमारी पूज्या जननी ने सार्वजनिक रूप से हम से जो प्रार्थना की थी या आदेश दिया था वह था कि 'बेटा ! जीवन में अपना लक्ष्य कभी भी धन कमाना न बनाना। सारी बुद्धि और शक्ति राष्ट्र की स्वतन्त्रता और महर्षि की लक्ष्य पूर्ति में लगाना।" उस समय उपस्थित हजारों आर्य नरनारी इस प्रार्थना को सुन भाव विभोर हो गए थे। किन्तु यह केवल भावावेश की ही बात नहीं थी।

आज २३ वर्ष बीत गए इस घटना को, किन्तु एक क्षण के लिए भी कभी हमने इस आदेश को विस्मृत नहीं किया। जो गुरुजन आज जीवित हैं वे जानते हैं कि हमारे परिवार की परम्परा बातों और भाषणों पर नहीं, त्याग-बलिदान की नींव पर खड़ी हुई है। आर्यसमाज का कार्य हमारे लिए किसी को प्रसन्न करने का साधन नहीं अपितु जीवन की एक मात्र साधना है। इसलिए सदैव बड़े से बड़े प्रलोभनों को ठुकराकर—गालियाँ, विरोध और आपत्तियों की आँधी आने पर भी हमने मार्ग नहीं बदला।

आर्य जनता का उन्मुक्त अजस्र प्रेम सहयोग हमें सदा मिला। बड़े से बड़े और असंभव कहे जाने वाले कार्यों में हमें सफलता भी अपूर्व मिली, पर दुर्भाग्य··· नेता कहे जाने वाले वर्ग ने सदा अकारण सफलता को असफलता में बदलने में ही अपना श्रेय समझा।

अपने लम्बे अनुभव के बाद हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि आर्य जनता महर्षि की अनन्य भक्त है। वह लक्ष्यपूर्ति के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने हेतु सदा तैयार रहती है किन्तु आर्य नेता (अपवाद रूप से दो चार को छोड़कर) प्रायः स्वार्थ साधन और गद्दी बनाए रखने में ही संपूर्ण शक्ति का व्यय करते हैं। वेद प्रचार की, महर्षि का लक्ष्य पूरा करने की उद्दाम लालसा का अभाव उनमें प्रायः पाया जाता हैं और हमारी सम्मत्ति में केवल यही कारण है कि आर्यसमाज संसार को आर्य बनाने में सफलता नहीं प्राप्त कर सका।

आज वह समय आ चुका है जबकि महर्षि के सच्चे सैनिकों को संगठित होकर अपना मार्ग महर्षि के निर्देशानुसार स्वयं बनाना होगा। सड़ा-गला स्वार्थी नेतृत्व जहाँ भी हो उसकी उपेक्षा कर सच्चे आर्यों को अपनी सेना सजानी होगी। तभी आर्यसमाज विश्व में अपनी भावना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का साम्राज्य स्थापित कर सकेगा।

आशा की यह किरण हमें उत्साह दे रही है कि अभी आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा के कुछ प्रमुख अधिकारी स्वार्थ और पदलिप्सा से दूर रहकर लक्ष्य सिद्धि के लिए सचेष्ट हैं। यह शुभ लक्षण है·· हम चाहते हैं कि प्रत्येक आर्य अपना मार्ग स्पष्ट जाने और समझे कि गुरुदेव दयानन्द ने जिस संदेश के प्रसार के लिए अपना जीवन लगाया था—वही संदेश हम भी अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुँचाएं।

वैदिक संदेश में वह अपूर्व सत्य निहित है जिसके लिए धरती के करोड़ों व्यक्ति तरस रहे हैं। इसलिए यदि हम स्पष्ट और वास्तविक रूप में अपनी बात जन-मानस तक पहुँचा सकें तो कोई कारण नहीं कि वह समय शीघ्र ही आ जाए जब धरती का प्रत्येक व्यक्ति वेदों के गीत गाए।

इसी स्वप्न को साकार रूप देने के लिए अनेक गुरुजनों, विद्वानों, महात्माओं संन्यासियों के हार्दिक शुभाशीर्वाद के साथ जन-ज्ञान-प्रकाशन हमने आरम्भ किया। इस प्रकाशन संस्था का एक-एक कण आर्यसमाज की, आर्य जनता की संपत्ति है किन्तु किसी भी व्यक्ति को इसे हानि पहुँचाने की अनुमति देने के लिए हम तैयार नहीं। हमारा कार्य, पद्धति, लक्ष्य सभी कुछ स्पष्ट है। जिन्हें विश्वास होगा वे सहयोग देंगे, जिन्हें महर्षि के लक्ष्य से प्यार होगा वे साथ आयेंगे। सर्वस्व समर्पण की भावना से हमने यज्ञ आरम्भ कर दिया···आहुति अपने सभी साधनों की देकर। यज्ञ की फैलती हुयी सुगन्धि सभी को स्वयं निमंत्रण देती जाएगी यह हमारी ध्रुव धारणा है।

गत २० वर्षों से निरन्तर आर्य-समाज के सेवा काल में आर्थिक दृष्टि से हमने खोया ही खोया है। और आज भी हमारे पास बैंक बैलेंस के नाम पर संपूर्ण परिवार की चल अचल संपत्ति का मूल्य भी १० ०) से अधिक नहीं है। और हमें इसका दुःख नहीं—इस स्थिति पर अभिमान है। हम मानते हैं कि—ब्राह्मण का धन केवल भिक्षा। धनोपार्जन हमारा काम नहीं, हमारा काम तो 'ज्ञान' बांटना है और इसमें सफलता हमारे आगे-आगे दौड़ती है।

'जन-ज्ञान'' का आरम्भ करते हुए हमारे पास १ पैसा भी न था। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने सर्व प्रथम आशीर्वाद भी दिया और १००) भी। तो हमने समझा संसार का साम्राज्य मिल गया, और फिर क्या था बिना पूँजी के भी आप का जन-ज्ञान शान से बढ़ रहा है। ८ मास की अवधि में ३ विशेषांक प्रकाशित किए। ११ पुस्तकों का हजारों की संख्या में प्रकाशन किया। माँग बढ़ती जा रही है। सहयोग मिलता जा रहा है, हम चलते चले जा रहे हैं।

क्या कर सकेंगे, इसका उत्तर समय देगा, पर इतना तो हम आज भी कहते हैं—तूफानों की आँधी हमारा मार्ग नहीं बदल सकेगी। 'ओ३म्' की पावन पताका को हमारे हाथ से कोई मृत्यु से पहले न ले सकेगा और विश्वास यह भी है कि हमारे बाद भी ऐसे हजारों व्यक्ति आगे आयेंगे जो अपना जीवन इस पताका के संदेश को फैलाने के लिए देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिए अपने-पराए, मित्र-शत्रु जो भी जहाँ हों, सभी समझ लें कि हमारा किसी से विरोध नहीं, किसी से द्वेष नहीं, महर्षि दयानन्द की राह पर चलने से हमारे कदम अभी तक डगमगाए नहीं हैं आगे भी न डगमगाएँ यह हमारी इच्छा है।

हृदय में सभी के प्रति अपार प्रेम लिए हम सभी को अपना समझते हैं। जो हमें गालियाँ देंगे हम उन की सद्-बुद्धि के लिए प्रभु से प्रार्थना करेंगे। सभी हमारे हैं—ईश्वर के पुत्र हैं। भाई-भाई हैं। प्रभु-कृपा करें कि वे अज्ञान छोड़कर ज्ञान के मार्ग पर चल सकें।

'वेद' ज्ञान का संदेश धरती पर फैलाने के लिए हम से जो कुछ भी बन सकेगा, करेंगे। महर्षि का मार्ग जिन्हें प्रिय हो 'पाखंड-खंडिनी-पताका' उठाने का साहस जिनके हृदय में हो वे हमारे साथ आयें, स्वागत !!

आर्य जन ! संकट की घड़ी में जब सभी आसुरी शक्तियाँ हमें मिटाने के लिए योजना बद्ध हैं, तब क्या हम अपने स्वार्थ और पद लिप्सा की भूख को नहीं जला सकते ? गद्दियों के लिए महर्षि के महान् लक्ष्य की हत्या करना क्या जघन्यतम अपराध नहीं है।

आओ, आत्म निरीक्षण कर दयानन्द का कार्य पूरा करने का, दयानन्द के लिए जीने और उसी के लिए मरने का व्रत लें।

मृत्यु का घंटा सिर पर बज रहा है, नींद न खुली तो कुछ नहीं बचेगा। उठो दयानन्द के वीर सैनिको ! ऋषि की आन शान और यश पताका को संभालो और अज्ञान के अंधड़ को समाप्त करने के लिए कृत संकल्प हो कर आगे बढ़ो।

विजय तुम्हारी बाट देख रही है।

एक थप्पड़ और.....

पादरी फेरर फिर भारत लौट आया .....। यह समाचार पढ़कर एक बार तो यह अनुमान हुआ कि किसी ने हमारे मुँह पर जोरदार थप्पड़ जड़ दिया है। देश द्रोही प्रवृत्तियों के अपराध में जिसे एक बार देश निकाला दिया जा चुका हो उसे भारत की सैक्यूलर सरकार ही पुनः घर में आग लगाने के लिए आने का निमंत्रण दे सकती है।

किसे कहें, क्या कहें··· जिनकी बुद्धि कहीं सैर करने चली गयी हो और जो स्वप्नों की दुनिया में तैरते हुए राज्य की बागडोर संभाले हों उनसे इसके अतिरिक्त और क्या आशा की जाए ?

हमारी देश भक्ति की परिभाषा देश द्रोहियों से प्यार और देश भक्तों से द्वेष का पाठ पढ़ा रही है। देश का भाग्य दुर्भाग्य के रूप में सर्वनाश का इतिहास लिखने में लगा है। नागालैंड हो या अंडमान निकोबार, गोवा हो या केरल, तमिलनाड हो या पंजाब, काश्मीर हो या बंगाल फेरर या फेरर जैसे भारत द्रोही विषधरों का फन सर्वत्र फुँकार रहा है।

राम-शिवा-प्रताप-सुभाष-गाँधी—और दयानन्द का नाम लेकर देश को बचाने वाले गद्दार और माओ-अयूब-ईसा के चालक चेले देश भक्त की संज्ञा पा रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान देने वाले वीरों की आत्मा पता नहीं आज कितने "रक्त-आँसू" बहा रही होगी। किन्तु लाभ क्या—देश में रहने वाले ४५ करोड़ आर्यपुत्र जब स्वार्थ और कायरता की भाषा में सोच रहे हैं, रक्त जब पानी बन चुका तब, कौन जागेगा, कौन थप्पड़ का जवाब घूँसे से देगा ? कौन कहेगा—भारत हमारा है, हम मर जायेंगे पर देश की स्वतंत्रता के शत्रुओं को नहीं पनपने देंगे।

हम साधनहीन भले ही हों पर प्रभु के विश्वास और सत्य के बल पर इन पंक्तियों द्वारा उन्हें पुकारते हैं जो भारत माँ की स्वतन्त्रता के लिए कुछ करना चाहते हों। जो स्वार्थ को जला त्याग की भट्ठी में से गुजर विदेशी पादरियों के षड्यन्त्रों को मिटाने में हमारे साथ आ सकें।

गत वर्ष हम ने ईसाइयत के दुर्गम दुर्ग को कंपा दिया था और प्रभु कृपा रही तो १९६९ के अन्त तक हम भारत के कोने-कोने तक प्रत्येक नागरिक की वाणी से यह स्वर गुँजाने का यत्न करेंगे—

विदेशी देशद्रोही !
पादरियो !
भारत छोड़ो।

थप्पड़ का जवाब घूँसे से—यही उत्तर होगा। यह उत्तर देने से ही देश बचेगा और हम अपनी स्वतन्त्रता की, परम्परा व गौरव की रक्षा कर सकेंगे।

हम इस मार्ग पर चल रहे हैं। साथ चलने के लिए आपको बुला रहे हैं पर—

क्या आप में साथ देने का साहस है ?

सत्संग सुधारिए

चिरकाल से हम यह प्रार्थना करते आ रहे हैं कि आर्यसमाज को शक्तिशाली बनाना है तो आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों को आकर्षक बनाइए। उनमें अधिक-से-अधिक उपस्थिति बढ़ाने का यत्न कीजिए।

सभी आर्यसमाज के शुभचिन्तकों को यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि साप्ताहिक सत्संग वह रीढ़ की हड्डी है जिस पर आर्यसमाज का शरीर सबल होकर सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकता है।

साप्ताहिक सत्संगों में—

१—अध्यात्म का प्रेमपूर्ण वातावरण होना चाहिए।

२—आर्यसमाज के सत्य सिद्धान्तों के प्रतिपादक भाषण होने चाहिएँ।

३—सरस सरल—भक्तिभाव पूर्ण भजन होने चाहिएँ।

४—वेद की महत्ता और ज्ञानवर्द्धक भाषण हों।

५—अपने क्षेत्र में आर्य समाज सन्देश प्रसार के साधनों पर विचार किया जाए।

इन ५ साधनों को अपना कर यदि प्रत्येक आर्य सपरिवार साप्ताहिक सत्संगों में पहुँचना अपना परम धर्म मान ले तो फिर देखिए आपका प्यारा आर्यसमाज किस तीव्रता से उन्नति करता है।

हमारी आर्यसमाज के अधिकारियों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे जहाँ तक भी संभव हो साप्ताहिक सत्संगों की ओर ध्यान दें। सत्संग की शक्ति ही हमारी शक्ति है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सत्य हृदयंगम हो जाए तो फिर सफलता को कौन रोकेगा ;

गो-रक्षा का प्रश्न

गो रक्षा आन्दोलन १९६६ में जिस सफलता से उभरा था नेताओं की अदूर-दर्शिता से उसी तेजी से समाप्त हो गया । अनशन-हड़तालें-बलिदान और सत्याग्रह सब व्यर्थ गए और फिर तो ऐसा हुआ जैसे मानो गो रक्षक नेताओं को सांप सूँघ गया ।

पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्दजी पर सरकार केस चला रही है और पहली पेशी सैशन में ११ जनवरी को है । अब तक किसी ने उनकी सुधि नहीं ली । भला हो श्री ला० रामगोपाल जी मन्त्री सार्वदेशिक सभा का, जिनका ध्यान इस ओर गया और पैरवी के लिए एक वकील का प्रबन्ध कर दिया । किन्तु गो-रक्षा महाभियान समिति ने इधर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं समझी । जिस व्यक्ति ने प्राण प्रण से गो-रक्षा आन्दोलन में प्राण फूंके उस व्यक्ति के ऊपर चलाए जा रहे केसों पर किसी का भी ध्यान नहीं ।

हम पर भी २ वर्ष निरन्तर मुकदमा चला, न जाने कितना व्यय और कितनी हानि हुई । क्या यह व्यक्तिगत अपराध था····· पर कौन सुने ? अतः यह प्रमाणित हो गया है कि गो-रक्षा महाभियान के नाम पर जो चूँ-चूँ का मुरब्बा इकठ्ठा हुआ था उसके द्वारा किसी सुफल की आशा व्यर्थ है ।

स्थिति उलझती जा रही है । गौ का रक्त आज भी बह रहा है—कैसे रुके यह महानाश का चक्र·····इस प्रश्न का उत्तर अगले अंक में देने का हम यत्न करेंगे । हम चाहते हैं कि यह कार्य आन्दोलन नहीं, बलिदानों द्वारा आगे बढ़े और नेतृत्व वे लोग संभालें जो स्वयं पहले बलि वेदी पर चढ़ सकें ।

आप भी तो सोचिए कि गो-माता की रक्षा के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

—भारतेन्द्रनाथ

ईसाइयत की वास्तविकता प्रकट करने वाले साहित्य प्रकाशन हेतु

अधिक से अधिक सहायता दें

हमारे पास उड़िया, हिन्दी, अँग्रेजी, मराठी आदि भाषाओं में ईसाई विरोधी साहित्य की निरन्तर माँग आती रहती है । साहित्य प्रकाशन के लिए तैयार भी है । अतः उदार राष्ट्र प्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे ईसाई विरोधी साहित्य प्रकाशन हेतु अपनी सहायता शीघ्रातिशीघ्र भेजें । जैसे-जैसे हमें सहयोग मिलता रहेगा, हम साहित्य प्रकाशित कर वितरित करते रहेंगे ।

विनीत

राकेश रानी

सम्पादक "जन-ज्ञान" प्रकाशन

१५९७, हरध्यानसिंह रोड, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

हैदराबाद

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

का

अध्यक्षीय भाषण

हैदराबाद : ८-९-१० नवम्बर १९६८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो,
त्वं माता शतक्रतो वभूविथ अधा ते सुमन मीमहे ।

ऋ० ८-९८-११

माताओ तथा सज्जनो !

४१ वर्ष व्यतीत हो गंए जब सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का आरम्भ हुआ था, उस महासम्मेलन के प्रधान पूज्य महात्मा हंसराज जी महाराज बनाए गए थे। और अब १०वें सम्मेलन का यह भार मुझे सौंपा गया है। संन्यास लेकर मैंने अपना मार्ग कुछ ऐसा निर्धारित किया था जिसमें ऐसे सम्मेलन सहायक नहीं बनते। मेरी इच्छा भी नहीं थी कि मैं इसे स्वीकार करता, किन्तु सारे आर्य जगत की आज्ञा की अवहेलना करना भी मैंने उचित नहीं समझा। क्योंकि आर्य जगत् के इतने अहसान मुझ पर हैं कि उसके आदेश पर मैं दहकते अग्नि-कुण्ड में भी कूद सकता हूं। अतः मुझे यह आज्ञा मानकर आपकी सेवा में उपस्थित होना पड़ा। आर्य समाज के इस दशम महासम्मेलन में देश के कोने-कोने से हजारों माताएं, और श्रद्धालु आर्य जन आए हैं—उन सभी को महर्षि के प्रति अगाध प्रेम है, यही प्रेम उन्हें यहां लाया है।

हम सभी को आज गंभीरता से अपने कर्त्तव्य का और भावी कार्यक्रमों का विचार करना है। मेरी प्रार्थना तो केवल यही है कि हमें सदा एक बात स्मरण रखनी है कि हम महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं और हमारा काम महर्षि के दिव्य स्वप्नों को पूर्ण करना है।

हमारे गुरुदेव दयानन्द ने समाधि का सुख छोड़कर, विष के प्याले पी-पीकर ईंट-पत्थर और गालियां खाकर भी मनुष्य जाति को मृत्यु मार्ग से हटा जीवन और आनन्द के मार्ग पर चलाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी थी। महर्षि चाहते थे कि संसार में रहने वाले ईश्वर के अरबों पुत्र सच्चे अर्थों में पिता के पुत्र बन आनन्द, शान्ति और प्रेम के मार्ग पर चलें। दुःख की छाया भी किसी के पास न आए। इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी और आज इस पवित्र लक्ष्य की पूर्ति कैसे हो, हमने यही विचार करना है। आज संसार में बहुत बड़े तूफान उठ खड़े हुए हैं। इन तूफानों से धरती पर सत्य का सिंहासन हिल रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती धर्म, मानवता, सभ्यता और संस्कृति को विनाश करने वाले उन तूफानों का सामना करने के लिए कार्य क्षेत्र में आए थे। भारत ही नहीं दुनियां के सभी देशों में इस समय भयंकर हा-हाकार मचा हुआ है। विज्ञान ने मानव को सुखी बनाने के लिए कसर उठा नहीं रखी परन्तु कष्टों, क्लेशों विपदाओं व परस्पर के संघर्षों में मानव अधिक फंसता हुआ चला जा रहा है।

पिछले २०-२५ वर्षों में दुनियां के अन्दर जो नाना प्रकार के परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं उनसे मानव सुखी नहीं हुआ अपितु दुःखी हो गया है। आर्य समाज ने अपने गत ९३ वर्षों में अपनी शक्ति से बढ़ कर कार्य किया है। अपने संपूर्ण कार्यों द्वारा आर्य समाज मनुष्य मात्र के कल्याण और उत्थान के लिए यत्नशील रहा है। वस्तुतः निष्पक्ष भाव से विचार किया जाए तो भू-मंडल में आर्य समाज ही एक मात्र ऐसा संगठन है जो मनुष्य-मनुष्य के बीच की समस्त दीवारों को समाप्त कर देना चाहता है। वह संसार के प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर का पुत्र होने के नाते भाई समझता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्ग-जाति रंग, नस्ल, ऊंच-नीच और देश के आधार पर आर्य समाज मनुष्य मनुष्य में कोई भेद स्वीकार नहीं करता।

आर्य समाज वेद के शब्दों में एक ऐसे संसार का निर्माण करना चाहता है :—

यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म्

यह संसार एक घोंसला बन जाए। सारे दुःख और सारे सुख हम मिलकर बांट लें तो फिर दुःख कहां रहेगा ? द्वेष, दुःख, ईर्ष्या और घृणा की हस्ती को आर्य समाज जड़ मूल से मिटा कर प्रेम-एकता और आनन्द के पवित्र संदेश को सर्वत्र प्रसारित करने के लिए कृत-संकल्प है।

इस महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज जन्म काल से ही यत्नशील रहा है। भारत वर्ष के अविद्यान्धकार में प्रकाश-ज्ञान की किरणें फैलाने का उसका प्रयत्न अत्यन्त सफल रहा और उसके कार्यों का ही यह परिणाम है कि आज स्त्री शिक्षा में वह लोग भी बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं जो उनकी शिक्षा के कट्टर विरोधी थे। वर्ण व्यवस्था तो स्थापित नहीं हुई पर जाति पांति के बन्धन स्वयमेव दूर होते जा रहे हैं। विद्या प्रचार के लिए आर्य समाज ने गुरुकुलों, कालिजों, पाठशालाओं और विद्यालयों का एक जाल-सा देश में बिछा दिया है जिसका अनुकरण अन्य लोग भी कर रहे हैं।

दैवी संकट में सेवा, सहायता के कार्य भी सबसे पहले आर्य समाज ने आरंभ किये। बीकानेर के अकाल, कांगड़ा के भूचाल और दक्षिण के तूफान व मालाबार के भयंकर नर-संहार में, बिहार और क्वेटा के भूकम्प में और इसी प्रकार सर्वत्र कष्ट क्लेश व दैवी विपदाओं में आर्य समाज के सेवक प्रथम पंक्ति में रहे हैं।

राष्ट्र की पराधीनता को स्वतन्त्रता में बदलने का मूलमन्त्र भी सबसे प्रथम आर्य समाज ने ही दिया। उसकी शिक्षा के परिणामस्वरूप निर्भयता और स्वराज्य की भावना फैलती गयी—और यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि १८५७ के भयंकर दमन के बाद महर्षि दयानन्द ने भारत को वैदिक संजीवनी न दी होती तो आज इस देश में राम-कृष्ण की, ऋषि-मुनियों की संस्कृति समाप्त हो चुकी होती।

आर्य समाज के प्रयत्नों और नए जागरण से देश स्वतन्त्र तो हो गया पर स्वराज्य के २० वर्ष बीतने पर भी भारत सुखी न हो सका। सुख की खोज में भटकती हुई दुनियां सुख से दूर होती जा रही है। जैसा पहले मैंने कहा तूफान बड़ा भयंकर है भारत स्वतन्त्र तो हो गया परन्तु इसके विरोधियों की गिनती भी बहुत बढ़ गई। हर प्रकार से भारत को नीचा दिखाए रखने के लिए चारों ओर से प्रयत्न हो रहे हैं। भारत के बाहर और भीतर से यह विरोधी तूफान बढ़ते ही चले जा रहे हैं। ऐसे समय में एक आर्य समाज ही ऐसी शक्ति दिखाई देती है जो इन तूफानों का सामना कर सके और आज भी मानवता की रक्षा और भारत के उत्थान व दुनियां को सन्मार्ग बताने के लिए आर्य समाज ही हमारी आशाओं का केन्द्र है। ऋषि दयानन्द के वीर सैनिकों से मुझे कहना है कि तूफान तो उठते ही रहते हैं और उठते ही रहेंगें। इनका मुकाबला हम आर्यों को करना ही होगा।

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसी अवस्था में करना क्या है? पहली बात, आर्य समाज को सशक्त बनाना। आर्य समाज की शिथिलता का सबसे बड़ा कारण आध्यात्मिकता की कमी है। आज से ३७ वर्ष पूर्व महात्मा नारायण स्वामी जी ने भी कहा था कि—"जन्म काल ही से जो उदासीनता आर्य समाज के सदस्यों ने आत्मिक सुधार के सम्बन्ध मे दिखाई है वह अक्षम्य है। जहां देखो दलीलबाजी मिलेगी। तर्क-ऋषि प्रतिष्ठित मिलेंगे। इस तर्क साम्राज्य में जो आर्य समाजियों ने स्थापित कर रखा है श्रद्धा और विश्वास का कोई स्थान नहीं है। इसीलिए ईश्वर विश्वास, आस्तिक बुद्धि, और भक्ति व प्रेम के बाहुल्य से जो तेज और शान्ति की झलक चेहरे से दिखाई दिया करती है, उनसे अधिकतर आर्यों के चेहरे शून्य मिलेंगे।"

मैं महात्मा नारायण स्वामी जी के शब्दों से पूर्णतया सहमत हूं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों में शारीरिक और आत्मिक उन्नति को साथ साथ रखा है। जब तक पक्षी के दोनों पंख न हों तब तक वह उड़ ही नहीं सकता। आज की दुनियां के दुःख और बिगाड़ का सबसे बड़ा कारण यही है, यह भौतिक उन्नति की ओर तो दौड़ती चली जा रही है और आध्यात्मिकवाद को इसने सर्वथा भुला दिया है। आर्य समाज की शिथिलता का भी कारण यही है और इसके अन्दरूनी झगड़ों का भी कारण यही है। आध्यात्मवाद के द्वारा एक ऐसा आत्मिक बल उत्पन्न होता है जिसके तुल्य कोई भौतिक शस्त्र-अस्त्र नहीं है। और इस बल को बढ़ाने के लिए महर्षि ने अपने ग्रन्थों में लिखा है कि प्रत्येक को न्यून से न्यून १ घण्टा ध्यानावस्थित होना चाहिए। महर्षि के ये शब्द हमें सदा समक्ष रखने चाहिएं। आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी नहीं घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा।

आर्य समाज में अध्यात्म की कमी के कारण आज देश में कितने ही मत मतान्तर निकल आएं हैं जो थोड़े ही वर्षों मे सर्व साधारण पर छा गए। महर्षि ने कार्यक्षेत्र में तब पदार्पण किया था जब निरन्तर २५-३० वर्षों तक साधना की भट्टी से अपने जीवन को गुजार चुके थे और आत्मिक व शारीरिक शक्ति प्राप्त कर चुके थे। तभी वे केवल ९ वर्षों में इतना बड़ा कार्य कर गए कि आज आर्य समाज के एक करोड़ के लगभग अनुयायी भी नहीं कर पा रहे।

अतः आर्य समाज के लिए आवश्यक है कि जैसे उसने नाना प्रकार की संस्थाओं द्वारा शारीरिक उन्नति के साधन जुटाए हैं इसी तरह साधना आश्रमों की स्थापना कर अध्यात्म बल को बढ़ाने का यत्न करें। हम सभी सदा यह स्मरण रखें कि हमें यह मनुष्य शरीर एक पवित्र लक्ष्य सिद्धि के लिए मिला है। वह लक्ष्य है प्रभु प्राप्ति। परमात्मा को भूल कर इस संसार में और भले ही सब कुछ मिल जाए पर शान्ति और आनन्द नहीं मिल सकता।

अध्यात्मवाद का रास्ता छोड़ देने से ही आर्य समाज की आंतरिक स्थिति भी शोचनीय होती जा रही है। स्थान-स्थान पर परस्पर वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष व कलह-क्लेश देखने में आते हैं। यह रोग इतना बढ़ चुका है कि अब इसकी चिकित्सा होनी ही चाहिए और इसके लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित विशेष न्यायाधिकरणों को सक्रिय और सबल होना चाहिए। और यह अनिवार्य नियम होना चाहिए कि आर्य समाज के सारे विवाद सरकारी न्यायालयों में न जाकर सार्वदेशिक सभा द्वारा संघटित न्याय सभा द्वारा ही निपटाए जाएं। कोई भी आर्य किसी भी स्थिति में आपस के विवादों को लेकर राजकीय न्यायालय में न जाए। जो जाए उसे आर्य समाज का सभासद न समझा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाए। इसे अनिवार्य नियम के होने से और अपनी न्याय सभाओं द्वारा न्याय कराने से ही इस पवित्र संगठन में एकता और प्यार बच सकेगा। अतः इस विषय में देरी न कर शीघ्र से शीघ्र आवश्यक पग उठाने चाहिएं। वस्तुतः मुकदमेबाजी से कभी झगड़े का निपटारा नहीं होता। परस्पर सहनशीलता, सामंजस्य की भावना और लक्ष्य के प्रति प्रेम व सहिष्णुता से ही समाज उन्नति कर सकता है। झगड़े तो निकृष्ट स्वार्थ से होते हैं इसे दूर करने के लिए अध्यात्मवाद ही अमोघ अस्त्र है।

आज के युग में विज्ञान और राजनीति दो बड़े हथियार माने जाते हैं। इन दोनों से ही आर्य समाज ने कार्य लेना है। आर्य विचारधारा वाले वैज्ञानिक वैदिक सिद्धान्तों का विज्ञान द्वारा समर्थन करें और राजनीति में रुचि रखने वाले आज की बिगड़ी राजनीति का सुधार करें। प्रचलित राजनीति तो इतनी गन्दी, घिनौनी और बदनाम हो चुकी है कि कोई भला आदमी तो इसमें भाग लेने के लिए तैयार नहीं होता। आर्य समाज के कुछ महानुभाव आर्य समाज को बलशाली बनाने के लिए यह सुझाव देते हैं कि आर्य समाज को सामूहिक रूप से राजनीति में भाग लेना चाहिए परन्तु इस राजनीति का अर्थ है केवल निर्वाचनों में भाग लेना और वोट एकत्र करना। और जिस प्रकार से आज वोट एकत्र किए जाते हैं क्या वही ढंग आर्य समाज बर्तने के लिए तैयार होगा? यदि होगा तो उसका पतन हो जाएगा, यदि नहीं होगा तो सफलता नहीं मिलेगी। फिर राजनीति में भाग कैसे लें, इसका मार्ग महर्षि ने दिखाया है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि—

"राजा और राजसभा के सभासद तब हो सकते हैं कि जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना, ज्ञानविद्याओं के जानने वालों से तीनों विद्या, सनातन दण्डनीति, न्यायविद्या, आत्मविद्या, अर्थात् परमात्मा के गुण, कर्म स्वभाव रूप को यथावत जानने रूप ब्रह्म विद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ (कहना और पूछना) सीखकर सभासद वा सभापति हो सकें। सब सभासद और सभापति इन्द्रियों को जीतने अर्थात् अपने वश में रख के सदा धर्म में वर्तें और अधर्म से हटें-हटाए रहें, इसलिए रात-दिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें, क्योंकि जो अजितेन्द्रिय अपनी इन्द्रियों (जो मन, प्राण और शरीर प्रजा है इस) को जाने बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।"

इस ऋषि के आदेश के अनुसार जो अपने को बना सकें वे राजनीति में लगें परन्तु बिना इस स्थिति को प्राप्त किए जो राजनीति में प्रवेश करेंगे, वे राजनीति का सुधार न कर सकेंगे अपितु आर्य समाज की शिथिलता का ही कारण बनेंगे। इसके साथ ही हमें आज की राज्य शक्ति और विज्ञान शक्ति का उपयोग अध्यात्म की उन्नति में करना है। वस्तुतः आर्य समाज आज के युग का मार्गदर्शन विज्ञान को अध्यात्म की खोज में प्रवृत्त करके ही कर सकता है। भौतिकवादी विज्ञान से भौतिक पदार्थों के रहस्य खोज रहे हैं। उन्हें सफलता भी मिल रही है। किन्तु समस्त भौतिक पदार्थों का भोक्ता जो "मैं" हूं, जिसे आत्म तत्त्व कहते हैं उसे कोई नहीं जानता। संसार के विश्वविद्यालयों में और सभी कुछ पढ़ाया जाता है किन्तु कहीं यह पढ़ाने का प्रबन्ध नहीं कि यह "मैं" कौन है? अतः सुख-शांति और आनन्द की धारा पृथ्वी तल पर बहाने, और साकार स्वर्ग दुनियां को बनाने के लिए आवश्यकता है कि विज्ञान और राजनीति अध्यात्म की खोज और प्रेरणा में लगें। इस राह का मार्गदर्शन केवल आर्य समाज ही कर सकता है।

आर्य समाज की शक्ति को बढ़ाने का सबसे बड़ा साधन यह है कि विदेशों में वेद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का सन्देश पहुंचाया जाए। मैं योरुप तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के अनेक देशों में भ्रमण कर आया हूं, वहां के लोग वेद की बात बड़ी श्रद्धा-भक्ति से सुनते हैं पर वेद को अपनी भाषा में पढ़ना चाहते हैं। राम-कृष्ण परमहंस के सच्चे शिष्य, स्वामी विवेकानन्द जी ने विदेशों में जाकर परमहंस रामकृष्ण जी का नाम अमर कर दिया। संसार का कोई देश ऐसा नहीं जहां रामकृष्ण मिशन न मिलते हों और भारत में भी इनकी शक्ति बढ़ती जा रही है। महर्षि दयानन्द को कोई विवेकानन्द नहीं मिला जो विदेशों में वेद का सन्देश सुनाता, फैलाता। योरुप, अफ्रीका आदि देशों के लोग पूछते हैं कि क्या वेद इंगलिश फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं में मिलते हैं जिस प्रकार आर्य समाज ने अध्यात्म-वाद से उदासीनता दिखाई उसी तरह वेद को विभिन्न भाषाओं में प्रसारित करने में भी उदासीनता दिखाई। अब तो यह उदासीनता छोड़नी चाहिए और वेदों के विभिन्न भाषाओं में सुन्दर प्रकाशन की व्यवस्था में आर्यसमाज को शक्ति लगानी चाहिए। हमें यह किसी भी स्थिति में नहीं भूलना चाहिए कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना हमारा साधारण नहीं—परम धर्म है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। उसकी उन्नति करना हमारा कर्तव्य है। किन्तु आर्य समाज का वास्तविक कार्य तो वेद-प्रचार है। एक भाषा से चिपटकर तो वेद का सन्देश संसार में नहीं फैल सकता। इसलिए संसार की प्रमुख भाषाओं में वेद भाष्य का आयोजन हमें अवश्य ही करना चाहिए और इस सम्मेलन में पधारे आर्य महानुभावों से मैं प्रार्थना करता हूं कि वे इस दिशा में रचनात्मक पग उठाएं। मैं तो इस दशम आर्य महासम्मेलन को तभी सफल समझूंगा जब इस दिशा में क्रियात्मक पग उठाने का वे संकल्प लेंगे। इसके साथ ही हमें प्रचार के आधुनिकतम उपाय भी व्यवहार में लाने होंगे। हमारा साहित्य, हमारे अखबार, ट्रेक्ट सभी ऐसे सुन्दर और आकर्षक होने चाहिएं कि उन्हें देखकर, पढ़कर सभी प्रभावित हों। विज्ञान ने प्रचार के जो नवीनतम साधन रेडियो, टेलीविजन, चल-चित्रादि खोजें हैं उनकी उपेक्षा कर हम अपना सन्देश नहीं फैला सकते। हमें अपनी विचारधारा फैलाने के लिए सभी सम्भव और आधुनिकतम साधनों का प्रयोग करने के साधन जुटाने चाहिएं।

देश-विदेश में अच्छे और प्रभावशाली प्रचारक तैयार कराने और फिर उनकी जीविका का प्रबन्ध करने की ओर ध्यान देना भी आगे बढ़ने के लिए परमावश्यक है। त्यागी, तपस्वी, साधक युवकों का स्वागत, सम्मान कर उन्हें वेद-सन्देश फैलाने की प्रेरणा करना भी आज की अनिवार्य आवश्यकता है। यह हर्ष की बात है कि हैदराबाद के आर्य बन्धु इस दिशा में क्रियात्मक पग उठा रहे हैं।

आर्य समाज को स्वामी दयानन्दजी महाराज ने गो-करुणानिधि देकर यह आदेश दे रखा है कि गोवंश की वृद्धि की जाए। किन्तु गो-रक्षा केवल नारों से नहीं हो सकती और न ही यह कार्य केवल सरकार के सुपुर्द किया जा सकता है। इसलिए आर्य समाज ने जैसे लोगों के अज्ञान को दूर करने के लिए विद्यालय स्थापित किए हैं इसी प्रकार गो-वंश वृद्धि के लिए गो-निकेतन आरम्भ करने चाहिएं। साथ ही सरकार को भी चाहिए कि वह अविलम्ब कानून द्वारा गो-वंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाए।

योरुप तक दूसरे देशों में ईसाइयत की प्रगति रुक चुकी है क्योंकि यह साइंस के विपरीत है। ईसाई मत के सेवकों ने यह देखा कि ईसाइयत के सिद्धान्त लोगों पर प्रभाव नहीं डाल सकते इसलिए उन्होंने ईसाइयत प्रसार के लिए सेवा-त्याग और प्रलोभन से कार्य लेना आरम्भ कर रखा है। और भारत में इन्हीं के बल पर ईसाइयत फैल रही है। हम केवल भाषणों से उनका सामना नहीं कर सकते। जहां कहीं ईसाइयों ने अपने हस्पताल, मंदिर आदि बनाए और सेवा कार्य आरम्भ किया वहां पहुंचकर हमें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी सेवा और त्याग का सहारा लेकर कार्य करना चाहिए। साथ ही सरकार को चाहिए कि वह विदेशी पादरियों की राजनैतिक गतिविधियों को धर्म-प्रचार की ओट में न पनपने दे।

आर्य समाज ने जो शुद्धि का कार्य आरम्भ किया था—उसमें सामूहिक शुद्धि के कार्य में हम सफल हुए—किन्तु व्यक्तिगत शुद्धि में सफलता हमसे दूर रही क्योंकि हमने उन्हें अपनाया नहीं। इस दिशा में व्यावहारिक और ठोस पग उठाने की आवश्यकता है। शुद्ध हुए बन्धुओं की आवश्यकताओं की पूर्ति और सामाजिक सम्मान के विषय में हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

अछूतोद्धार का कार्य आर्य समाज अपूर्व सफलता से कर रहा था और जिन्हें अछूत कहा जाता था उन्हें आर्य समाज सभी के बराबर बिठा रहा था किन्तु स्वराज्य मिलते ही जिन लोगों के हाथों में राज्य की बागडोर आयी उन्होंने आर्य समाज के ७० वर्ष के परिश्रम पर पानी फेर दिया। इस अछूतोद्धार के लिए कितने ही आर्य युवकों ने अपनी बलि देकर अछूत कहे जाने वालों को यज्ञोपवीत देकर द्विज बनाया। किन्तु शासन ने हरिजन नाम और उन्हें कानून का संरक्षण देकर उन्हें विशेष वर्ग के रूप में पैदा किया। परिणामस्वरूप जिन्हें आर्य समाज ने उठाया था और संस्कार तक कराते थे वे फिर उसी गढ्ढे में गिर गए और इस नीति ने देश में एक गंभीर समस्या उत्पन्न कर दी है जिसके लिए उत्तरदायी सरकार की अदूरदर्शितापूर्ण नीति है।

आज हैदराबाद में यह सम्मेलन हो रहा है यह हैदराबाद वह संग्राम-स्थली है जहां युवक व वृद्ध आर्यों का खून बह चुका है। निजामशाही के अन्याय के विरुद्ध आर्य समाज ने जब सत्याग्रह आरंभ किया तो कहा गया कि आर्य समाज ने पहाड़ से टक्कर लगाई है किंतु दुनियां ने देख लिया कि आर्य वीरों के बलिदान, तप, त्याग पवित्र भावना ने आज उस पहाड़ का अस्तित्व भी समाप्त कर दिया है। आर्य समाज का यह सत्याग्रह पूर्ण सफल रहा था। अतः हम श्रद्धा से स्वर्गीय श्री श्यामलाल, विष्णु-भगवान, दत्तात्रेय, शिवचन्द्र आदि वीर शहीदों की स्मृति में सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ऐसी पवित्र भूमि पर यह सम्मेलन हो रहा है, हमें यहां से तब उठना चाहिए जब हम ऐसे निश्चय कर लें कि जिन से आर्य समाज पूर्ण शक्तिशाली होकर महर्षि के महान् लक्ष्य को पूर्ण कर सके। अन्त में मैं अपने हृदय की बात आपसे कहना चाहता हूं और वह यह कि—

१. आर्य समाज में अध्यात्मवाद को मुख्य स्थान दिया जाए।

२. वेद विचार के प्रसार और प्रचार के लिए जो आर्य देवी पुरुष स्वाध्याय-शील हैं वे वानप्रस्थ या संन्यास ग्रहण कर प्रचार में जुट जाएं।

३ विदेश प्रचार के लिए इंग्लिश, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं में प्रचारक और साहित्य तैयार किए जाएं।

४. आर्य समाज के आंतरिक झगड़ों को मिटाने के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित निष्पक्ष सज्जनों की न्याय सभाएं कार्य करें।

५. आर्य समाजें अन्य कार्यों को करते हुए गो-निकेतन भी आरंभ करें।

६. जो लोग राजनीति में भाग लेना चाहते हैं वे पहले योग साधन की भट्टी में से अपने को गुजारें।

७. सन्यासियों, उपदेशकों और विद्वानों का पूर्ण सम्मान होना चाहिए ताकि वे अनुभव करें कि वेद प्रचार करते हुए उनका कार्य आदर की दृष्टि से देखा जा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माताओ और सज्जनो !

मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता । मेरा हृदय तो आपके उत्साह और उमंग को देख कर हर्ष विभोर हो रहा है । मैं तो वह दिन देखने के लिए तरस रहा हूं जब सत्य, धर्म और मानवता की प्रतीक, 'ओ३म्', की यह पावन पताका धरती के प्रत्येक मनुष्य के हृदय मंदिर पर लहर-लहर लहराएगी ।

मैं तो आपसे यही प्रार्थना करता हूं कि आप दयानन्द के वीर सैनिक बनें और वेद विचार के प्रचार के लिए जुट जाएं । आपस की फूट, ईर्ष्या द्वेष, स्वार्थों को यज्ञ की अग्नि में समाप्त कर प्रेम, एकता, संगठन और त्याग का मन्त्र लेकर यहां से जाएं और अपने महान् गुरु दयानन्द ऋषि के चरणों की स्मृति में बैठकर व्रत लें कि हम अपनी पूरी शक्ति महर्षि के दिव्य स्वप्नों की पूर्ति में लगा देंगे ।

आर्य माताओ और सज्जनो ! ध्यान से देखो और विचारों, हमारे धर्म पर, संस्कृति और परंपरा पर संकट की ऐसी काली घटा सारे इतिहास में कभी नहीं मंडरायी जैसी आज आयी है । समस्त आसुरी शक्तियां अपने हथियार सजा कर सत्य, धर्म और मानवता को मिटाने की तैयारी कर निरंतर आगे बढ़ रही हैं । ईश्वर के अमृत पुत्रो ! उठो ! अपने गुरु के चरण चिन्हों पर चल कर, सत्य का बल और प्रभु का विश्वास लेकर, पवित्र 'ओ३म्' पताका के साथ आगे बढ़ो ! कार्य करो, विजय निश्चय ही तुम्हारी होगी क्योंकि सत्य तुम्हारे साथ है ।

एक संन्यासी होने के नाते मैं आपसे गुरुदेव देव दयानन्द का कार्य पूरा करने की भिक्षा मांगता हूं·····

"प्राण जाएं तो जाएं, पर वेद की ध्वजा न झुकने पाए ।

मुझे विश्वास है कि आप यह भिक्षा अवश्य ही मेरी झोली में डालेंगे, और मेरे साथ मिल कर घोषणा करेंगे कि :—

" वैदिक धर्म जहाँ से मिटा है न मिटेगा,
फूंकों से आफताब बुझा है न बुझेगा ।"

आनन्द स्वामी सरस्वती
नई दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोगवाद के प्रवाह में
संतप्त व्यक्तियों को

अध्यात्म केन्द्र का निमन्त्रण

आचार्य स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती

योगाभ्यासार्थ सर्व प्रथम मैं १९६२ में योगनिकेतन पहुँचा था। मस्तिष्क तर्क और हृदय अविश्वास से भरा था। पातञ्जल योग पर तो आस्था थी, उस का कोई सिद्ध गुरु भी है यह भरोसा नहीं था।

उन दिनों महाराजजी (श्री १०८ स्वामी योगेश्वरानन्द जी महाराज) योगाभ्यास नहीं कराते थे। अभ्यास के समय वे ऊपर दूसरी मंजिल में होते थे। अभ्यास नीचे के कमरे में होता था। शिक्षक का आसन महाराज जी के योग्य शिष्य संभालते थे। जिन पर श्रद्धा कर योग सीखने बैठना कठिन था। पर जब घर छोड़कर आ ही गए तो चारा ही क्या था। बड़े अनमन मन से अभ्यास में बैठे।

पहली ही बैठक में प्रकाश की धाराएँ बहने लगीं। डेलाइट जैसा प्रकाश दण्ड सामने उपस्थित हो गया। आँखें खोलकर देखा तो भी बना था। बड़ा श्रद्धा उद्रेक हुआ। आनन्द विभोर हो उठा। प्रकाश का क्रम कुछ भेद से प्रतिदिन चलता रहा।

मैं समझ रहा था, यह प्रकाश मेरे अपने दीपक का नहीं है। कहीं से आता है। पर जहाँ से भी आता है वह महान् व्यक्तित्व है। जिसने सत्त्व पर विजय पाई है और वह उसे इच्छानुसार सञ्चारित कर सकता है। यह भी निश्चित था कि यह सब विभूति महाराजजी के अतिरिक्त अन्य किसी की नहीं है। इस को मैंने पातञ्जल की विशोका वा ज्योतिष्मतीका (यो० १।३६) का रूप माना। इस परिक्रम से योग में आस्था दृढ़ होती है। मेरी भी आस्था दृढ़ होती गई। महाराजजी के आत्म विज्ञान में वर्णित और चित्रित प्रायः सब ही दृश्य कुछ भेद से सामने आए। महाराजजी की यह महान् उपलब्धि और देन है।

उन दिनों अभ्यास गंगा पार रानी की कोठी में प्रातः ४ बजे प्रारम्भ होता था। हम लोग कोठी से एक फर्लांग दूर लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में रहते थे। प्रातः २ बजे उठते। थोड़ा अभ्यासार्थ बैठते अपनी-अपनी कुटिया में। १।२ बजे के बीच घण्टे घड़ियाल खड़कने लगते। आरती होने लगती। मन कोसता, ये पुजारी कैसे हैं, रात को भी सोने नहीं देते। ४ बजे फिर जाने के समय आरती होती। रहस्य समझ में नहीं आया। किसी से कुछ कहा नहीं। आर्य समाजी था। भय था कहीं स्थान ही न छीन लिया जाए। साथियों से भी कोई बात इस विषय में न की। पर पीछे ज्ञात हुआ वे घण्टे घड़ियाल मन्दिर की पूजा के नहीं थे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे तो मेरे ही अन्दर की ही ध्वनियाँ थीं। जो सात्विक भाव बढ़ जाने से सुन पड़ती थीं। इस सात्त्विक अभिवृद्धि को ही लोगों ने योगारम्भ के नाम से कहा है।

आसन से उठते ही शौच स्नान से निवृत्त हो ३॥ बजे महाराजजी की साधना में पहुँचते। कड़कती ठण्ड। ऊपर से स्वर्गाश्रम की लक्ष्मण झूले की पर्वतमाला से रात के १२ बजे से प्रातः ११ बजे तक शरीर को चीर देने वाला झक्कड़ा, कम्बल लपेटे, टार्च हाथ में लिए, ठोकरें खाते, श्रद्धा प्रेरित भावना का सम्बल लिए पहुँच जाते। कितने ही साथी शीत को सहन न कर पाते और महाराज जी से प्रातःकाल की साधना से छुट्टी ले लेते। केवल सायंकाल की साधना पर ही सन्तोष कर लेते।

जल भी कूप से निकालना होता था। या नल का वर्फिला पानी। टट्टी पर प्रायः ठण्ड में प्रतीक्षा करनी पड़ जाती थी। भोजन के लिए भी कानपुर वाली कोठी में पहुँचना पड़ता था। दूध का भी दोनों समय वहाँ ही वितरण होता था। आसनों के लिए भी महाराजजी की कोठी में पहुँचना पड़ता था। बहुत बड़े समय का अपव्यय होता था।

मन्दिर और दुकानदारों के लाउड-स्पीकर ऊँची ध्वनि से सिनेमा आदि के गीतों को गा-गाकर ध्यान में बाधा डालते थे। बाजार भी पास ही था, स्वादिष्ट व्यंजन देख मन चलायमान हो ही जाता था। अन्य यात्रियों के साथ रहने से व्यर्थ गप-शप, वाद-विवाद में भी समय नष्ट होता ही था। स्थान की अन्य कोई व्यवस्था हो नहीं सकती थी। इस सब स्थान आदि के उपयोग के लिए महाराजजी स्वर्गाश्रम को पर्याप्त आर्थिक सहयोग देते थे। पर साधना के प्रत्यवाय हटाने का कोई उपाय न था। साधक भी मन-ही-मन खीज कर रह जाते थे। कभी आने वाले लेट हो जाते थे गंगा के इधर ही रात को ठहरना पड़ता। कष्ट भी बहुत होता था। महाराजजी के अनन्य शिष्य स्व० महात्मा प्रभु आश्रित जी को भी इसका शिकार बनना पड़ा था।

जान पड़ता है महाराजजी इन सब कठिनाइयों का अनुभव करते थे। पर कहते कुछ न थे। महाराजजी का स्वभाव भी बड़ा उदार है। सिख, जैन, बौद्ध, सनातनी, आर्य समाजी, ईसाई, शैव, वैरागी, सब ही प्रकार के इंग्लिश, फ्रांसीसी, अमरीकी, रूसी, धनी और निर्धन साधक आते, महाराजजी की उदारता सबको ही प्रश्रम और यथा-सम्भव सुख-सुविधा प्रदान करती थी।

दयालु देव ने सन् ६२ में मुनिरेती के परिसर में मणिकूट उपत्यिका में योग निकेतन के लिए भूमि खरीद ही डाली। मार्ग बड़ा ऊबड़खाबड़ था।

दूसरे सत्र में पहुँचा तो आश्रम तक की सड़क को चौड़ा मार्ग बनाने के लिए पर्वत तोड़ा जा रहा था। जंगल काटा जा रहा था। पत्थर की खड़ी दीवार बनाने के लिए पत्थर ढोये जा रहे थे। मार्ग पर दस हजार व्यय का अनुमान था। दूसरी बार पहुँचा तो सड़क बन चुकी थी। विशाल साधना भवन की नींव खुद रही थी। भवन के इर्द-गिर्द चार कमरों की साधक कुटि-यायें बनने लगीं थीं। तीसरी बार मैंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

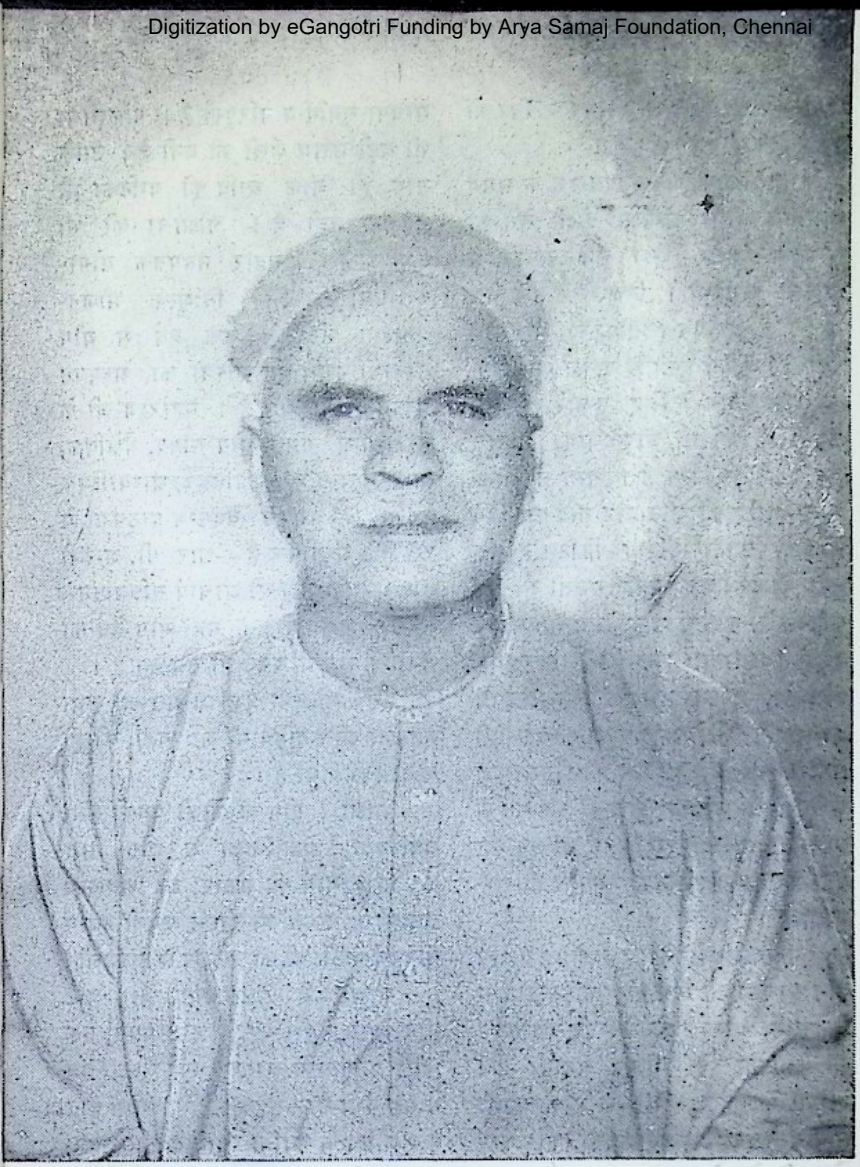

अध्यात्म ज्योति के प्रसारक : स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती

जन्म से क्रान्तिकारी, साधक और परम तपस्वी बाल-ब्रह्मचारी योगीराज व्यासदेव जी महाराज के चरणों के दर्शन १९४० में अति निकट से किए थे। दुर्भाग्य कि समय की गति में उलझकर फिर दर्शन न हो सके फिर भी संकट की घड़ियों में उनके सान्निध्य की स्मृति निरंतर प्रेरक रही है। वस्तुतः सत्यज्ञान ज्योति प्रसार द्वारा वे मानवता का मार्ग दर्शन कर रहे हैं। प्रख्यात आर्य विद्वान् आचार्य राजेन्द्रनाथ जी (अब स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती) लिखित उनके आश्रमका वर्णन सभी को शान्ति प्राप्ति के लिए निमंत्रण दे रहा है। प्रभु कृपा करें कि भोगवाद का प्रवाह अध्यात्म की किरणें मिटा सके। —संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देखा—पीछे धर्मशाला, लंगर व विरक्तों की कुटियायें बन चुकी हैं।

गत वैशाखी पर उद्घाटन के समय महाराज श्री से संन्यास दीक्षा लेने का सौभाग्य मिला, देखा सब कमरों में बिजली लगी है। बिजली के पंखे चल रहे हैं। दूरभाष (टेलीफोन) भी बोल रहा है। प्रत्येक कुटी में फलश के शौचालय और स्नान के लिए फुआरे लगे हैं। कमरों में प्रकाश और वायु के खुले संचार की व्यवस्था है। साथ ही शीतकाल में खिड़की और द्वार बन्द कर दिये जाएँ तो इतना बढ़िया फिटिंग है कि हवा अन्दर घुस नहीं सकती। सब कुटियों से साधना भवन समान अन्तर पर है। साधना भवन की स्वच्छता, पवित्रता, एकान्तता और स्तब्धता तो अभ्यास में बैठ अनुभव करने से ही सम्बन्ध रखती है। भवन की विशालता आकाश के समान साधक के मन में एकाग्रता और पारदर्शिता उत्पन्न कर देती है। व्यासपीठ की अपनी ही सुरम्यता है।

महाराज श्री ने यह विशाल आश्रम योग साधकों को यहाँ की कठिनाइयों से निकालने और "योग विश्वविद्यालय" की स्थापना के लिए बनाया है। गर्मियों में महाराज श्री के उत्तरकाशी और गंगोत्तरी के भव्य भवनों का उपयोग भी हो सकेगा।

इस प्रकार महाराज श्री की योग साधना सर्वांगीय परिपूर्ण है। पाकशाला भी बड़ी उत्तम शैली की बनी है। उसके साथ ही शाक आदि की वाटिका भी लहलहा रही है। गौशाला की भी योजना है। होनहार नवयुवक योगाभ्यासियों के लिए निःशुल्क भोजन-व्यवस्था भी है। इस वर्ष से योग सम्बन्धी ग्रन्थों एव शास्त्रों का अध्ययन अध्यापन भी चालू है। महाराज जी के चारों ग्रन्थ, गीता, योग सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, १० उपनिषदें, आध्यात्मिक १००० के लगभग वेदमन्त्र पाठ्क्रमों में रखे हैं। अध्यापक हैं—आर. पी. शास्त्री एम. ए. और मैं (श्री आचार्य सच्चिदानन्द सरस्वती शास्त्री)। यह योग वेद का संगम संसार में अपने ही ढंग का है।

स्व० महात्मा प्रभु आश्रित जी तथा महात्मा आनन्द स्वामी जी वहाँ की ही योगी विभूतियाँ हैं।

आओ ! योग के खोजी युवको तथा वनस्थियो ! एक निष्ठा से योग सिद्ध कर ऋषि मार्ग को संसार का अवलम्ब बनाओ। जगत् को राग-द्वेषमयी स्वार्थ परिपूर्ण पार्टीबंदी की दलदल से निकालो।

आश्रम में नित्यप्रति ३।। घण्टे योगाभ्यास, २।। घण्टे शास्त्राध्ययन, एक घण्टा प्राणायाम आसन, एक घण्टा यज्ञ सत्संग तथा साप्ताहिक भाषणाभ्यास होता है। जीवन में शान्ति आनन्द सुधा बरसाने के लिए आश्रम आपको निमन्त्रण दे रहा है।

●

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य।

साम० १-१-१-६

O' God (Agni), be The mighty aids save us from ail the enemies and from all those who hate mankind.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक प्याला

विष और अमृत से भरा, जिन्दगी है एक प्याला !

*

अपनी भूल खला करती है,
बाती रोज़ जला करती है,
असह्य जलन के साथ में, चाँद का प्यारा उजाला !

*

शापों में वरदान पगे हैं,
कण्टक से कलि मान जगे हैं,
असह्य चुभन के साथ में, फूल सी मुस्कान माला !

*

भादों का ताप झुलसता है,
वर्षा में आप विहँसता है,
असह्य तपन के साथ में, बादलों ने शिविर डाला !

*

जीवन का रूप उतरता है,
कारक का रूप सुधरता है,
असह्य घुटन के साथ में, प्राण का लहरा दुशाला !

★ —रमाकान्त दीक्षित

चा र चौ प दे

शिक्षा का शिव-रूप भ्रष्ट कर, कब व्यवहार पनप पायेगा ?
'संगच्छध्वं' को विस्मृत कर, कब परिवार पनप पायेगा ?
भुला 'मनुर्भव' अणु बम सेवी, कब संसार पनप पायेगा ?
'मा भैः' का उद्घोष छोड़कर, कब आधार पनप पायेगा ???

कोरी श्रद्धा के आँचल में, ढोंगों का परिवार निकलता !
जड़ तीखे तर्कों के घट से, कलह-कलुष मद-सार छलकता !
दृष्टिकोण सीमित करने से, पल-पल भ्रष्टाचार पुलकता !
आकाशी आदर्श पाल, मल पीने को संसार ललकता !!

वेद पढ़ो, समझो, समझाकर, व्यवहारों में पद-पद पालो !
रूढ़ि-ढोंग के घेरे तोड़ो, कारा से ऋत-सत्य निकालो !
आस्तिक पर-हित-निरत जनों के, कोटि-कोटि दृढ़ साँचे ढालो !
काट निराशा के फंदे सब, आस्था, निष्ठा, श्री प्रतिपालो ॥

—भैरवदत्त शुक्ल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक दर्शक की लेखनी से

● भगवानदेव शर्मा, (टंकारा)

दशम आर्य महा सम्मेलन

इतिहास साक्षी है कि संसार में बिना प्रचार के किसी भी विचार धारा का प्रभाव नहीं पड़ा। आर्य समाज ने उत्तर भारत में तो पर्याप्त कार्य किया; परन्तु दक्षिण भारत में इसका प्रयास सन्तोषप्रद नहीं रहा। आर्य समाज के प्रचारक दक्षिण की ओर नहीं बढ़े, उसका मुख्य कारण हमारी दृष्टि से वहाँ की भाषा का ज्ञान न होना है। यह कार्य कुर्बानी मांगता है। ३० वर्ष पूर्व सन् ३८-३९ में निजाम शाही ने आर्य प्रजा पर अत्याचार करने शुरू किये; तब आर्यवीरों ने हजारों की संख्या में सत्याग्रही बन कर उसका मुकाबिला किया। कई बलिदान देने के पश्चात् आर्यों की विजय हुई और हैदराबाद के निजाम को झुकना पड़ा। उस समय दक्षिण में आर्य समाज का काफी प्रचार हुआ। मद्रास, केरल, मैसूर, उड़ीसा आदि प्रान्त फिर भी आर्य विचार धारा से विमुख रहे; जिसका मुख्य कारण उन प्रान्तों में प्रचार की योग्य व्यवस्था का अभाव था। और कमी थी उन प्रान्तों की भाषा में बोलने वाले प्रचारकों और साहित्य की।

इस वर्ष हैदराबाद में दशम् सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन ता० ८-९-१० नवम्बर १९६८ को मनाया गया। दिल्ली से ६०० आर्य यात्रियों की एक "आर्य स्पेशल ट्रेन" हैदराबाद तथा दक्षिण भारत की यात्रा कर आई, इस ट्रेन से दक्षिण में पर्याप्त प्रचार हुआ; परन्तु साहित्य की कमी रहने के कारण कोई ठोस कार्य न हो पाया। फिर भी जो कुछ हुआ उससे हमें सन्तोष है। "अकरणान्मन्द करणं श्रेयः"

५ नवम्बर को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आर्यों का साम्राज्य था। ६०० आर्य यात्रियों को विदाई देने के लिए हजारों उनके सम्बन्धी वहाँ उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा के महा मंत्री संसद् सदस्य लाला रामगोपाल जी शाल वाले यात्रियों की मंगल मय यात्रा हो इसके लिए शुभकामनाएँ लेकर स्टेशन पर विदाई देने के लिए आये हुए थे। महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज अस्वस्थ होते हुए भी भक्तों के आग्रह पर हैदराबाद तक साथ चलने के लिए तैयार हो गये। ठीक ६ बजे सायंकाल "वैदिक धर्म की जय" 'महर्षि दयानन्द की जय' 'आर्य समाज अमर' रहे के गगन भेदी नारों के लगते ही ट्रेन ने हैदराबाद के लिए प्रस्थान किया।

दूसरे दिन तारीख ६ को प्रातः ७ बजे हमारी ट्रेन भाँसी पहुँची। वहाँ के प्रसिद्ध दैनिक पत्र "जागरण" के सम्पादक और आर्य समाजी नेता श्री जयचन्द जी आर्य के नेतृत्व में वहाँ के आर्यों ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यात्रियों का भव्य स्वागत किया। बैंड बाजों के साथ जलूस निकाल कर आर्य कन्या महाविद्यालय में ले जाया गया। वहाँ ऋषि के परम भक्त स्वन्तत्रता संग्राम के प्रसिद्ध सेनानी पण्डित परमानन्द जी की अध्यक्षता में सब यात्रियों का स्वागत किया गया। प्रातः राश लेकर झाँसी का किला देखकर ३ बजे ट्रेन ने झाँसी से प्रस्थान किया। तारीख ७ को प्रातः ९ बजे ट्रेन नागपुर पहुँची। वहाँ के आर्य भाइयों ने फल तथा फूलों से स्वागत किया।

तारीख ८ को दिन के ११ बजे ट्रन ज्यों ही हैदराबाद स्टेशन पर पहुँची संसद सदस्य लाला रामगोपाल शालवाले आर्य भाइयों के साथ यात्रियों का स्वागत करने के लिए वहाँ उपस्थित थे। आर्य यात्रियों ने हैदराबाद पहुँचते ही—

"रास्ता कर दो खाली।
आई फौज दयानन्द वाली॥"

के नारों से हैदराबाद को गुंजाकर, ३० वर्ष पूर्व के आर्यों के उत्साह का दृश्य खड़ा कर दिया। दिन को ठीक एक बजे सम्मेलन के अध्यक्ष महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का चार मीनार से भव्य जलूस निकाला गया। देश भर से आए हुए एक लाख व्यक्तियों ने उसमें भाग लिया। सबसे आगे आर्य वीर दल के सेनापति, आर्य युवक हृदय सम्राट् संसद् सदस्य श्री ओमप्रकाश जी त्यागी 'ओ३म्' की पावन पताका लेकर गजारूढ़ थे। यह दृश्य देखकर ऐसा लगता था, मानो दक्षिण भारत में आर्यों की विजय कूच हो रही हो। वास्तव में था भी ऐसा ही। ३० वर्ष पूर्व जब आर्यों ने हैदराबाद में प्रवेश किया था; उस समय निज़ाम शाही का ध्वज फहराता था; परन्तु इस बार निज़ाम शाही का सूर्य अस्त ही नहीं पाया—स्वंय निज़ाम भी काल के ग्रास बन चुके थे। तारीख ८ नवम्बर को हैदराबाद में मानवता का सन्देश देने वाली पवित्र ओ३म् की पताका लहराती हुई नज़र आती थी। जलूस में एक खुली सुन्दर सजी हुई कार पर हर नागरिक की दृष्टि थी। इसी कार में हमारे तपस्वी, त्यागी विद्वान् अध्यक्ष महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज विराजमान थे। आपकी एक ओर सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री लाला रामगोपाल शालवाले ओम् की ध्वजा लेकर बैठे थे दूसरी तरफ सभा के उपाध्यक्ष पद्म भूषण डॉ० दुःखन राम जी बैठे हुए थे। जिन मार्गों से जलूस निकला उसे सुन्दर ढंग से सजाया गया था। स्थान-स्थान पर फूलों की वर्षा करके स्वागत किया जा रहा था। दिल्ली से स्पेशल ट्रेन में आए हुए आर्यों ने तो जलूस में चार चाँद लगा दिए। उनके उत्साह उमंग, नाचने-कूदने को देख कर लोग दंग रह जाते थे। इस दृश्य को देख कर हमें कवि की निम्न पंक्तियाँ याद हो आईं—

तेरे दिवाने जिस घड़ी,
दक्षिण दिशा को चल दिए।
हैरत में लोग रह गए,
दुनियाँ का दिल हिला दिया॥

स्थानिक लोगों का कहना था—"हैदराबाद के इतिहास में" ऐसा भव्य और लम्बा जलूस हमने कभी नहीं देखा। यह आर्यों के संगठन का सूचक था।

आर्यों के स्वर्गीय रत्न श्री विनायकराव जी के नाम से बनाए गए विशाल "विनायकराव नगर" में तीन दिन तक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेला लगा रहा। अनेक विद्वानों की अध्यक्षता में विविध सम्मेलन सफलता-पूर्वक हुए। अनेक प्रस्ताव भी पास किए गए। तारीख ८ नवम्बर को सार्वदेशिक सभा के उपाध्यक्ष पद्म भूषण डॉ० दुःखनरामजी ने 'ओ३म् ध्वज' फहराया। दिन के ११ बजे संसद् सदस्य लाला रामगोपाल जी शालवाले ने दीपक जला कर एक सुन्दर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में आर्य समाज की तरफ से चलाए गए अनेक आन्दोलनों का चित्रमय इतिहास दिया गया था। और शराब, गो.मांस भक्षण आदि की हानियाँ बताते हुए चित्र दिये गये थे। सायंकाल ६ बजे महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अध्यक्षता में सम्मेलन शुरू हुआ; जिसका उद्घाटन भारत स्थित मोरिशस के हाई कमिश्नर श्री रविन्द्र-धरभरन ने किया। स्वागताध्यक्ष पण्डित नरेन्द्र जी ने स्वागत भाषण में महत्वपूर्ण विचार रखे। अध्यक्षीय भाषण में महात्मा आनन्द स्वामी जी ने आर्यों से आध्यात्मिक जीवन बनाने की अपील करते हुए विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया।

तारीख ९ नवम्बर को ११ बजे श्रीमती सुशीला देवी, विद्यालंकृता की अध्यक्षता में आर्य महिला सम्मेलन हुआ; जिसका उद्घाटन श्रीमती अनीला काव्यतीर्थ ने दिया। बड़ौदा आर्य कन्या महा विद्यालय की आचार्या यशोदा बहिन तथा वाराणसी की सुश्री प्रज्ञाकुमारी आदि के भाषण अच्छे रहे। सब बहिनों ने स्त्री जाति की गिरती हुई अवस्था पर चिन्ता प्रकट की। और उसे सुधारने के लिये ठोस कदम उठाने का सबको आह्वान किया। मध्याह्न को तीन बजे पण्डित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड की अध्यक्षता में "वेद सम्मेलन" हुआ। स्वामी सर्मपणानन्द जी ने इसका उद्घाटन किया। श्री पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक तथा संसद्-सदस्य श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री, के विद्वत्तापूर्ण भाषण हुए। सब वक्ताओं ने वेद की महत्ता बताते हुए उसके उपदेशानुसार अपने जीवन को बनाने की अपील की। सायंकाल ६ बजे संसद् सदस्य श्री बलराज मधोक की अध्यक्षता में "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन" बहुत सुन्दर रहा। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने किया। सार्वदेशिक सभा के महा सचिव लाला रामगोपाल शालवाले संसद सदस्य, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सेनापति संसद् सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी, तथा श्री रामनारायण शास्त्री ने इस सम्मेलन में अपने महत्व-पूर्ण विचार रखते हुए—देशद्रोही विचार धारा रखने वालों का दमन करने के लिए आर्यों से अपील की।

तारीख १० नवम्बर को ११ बजे पद्म भूषण डॉ० दुःखनराम जी की "अध्क्षता में" आर्य वीर दल सम्मेलन हुआ जिसका उदघाटन दल के सेनापति संसद् सदस्य श्री आम्प्रकाश जी त्यागी ने किया। सम्मेलन में आर्य वीर दल की शक्ति को मजबूत बनाने पर बल दिया गया। और देश के नवयुवकों की बिगड़ी हुयी अवस्था पर चिन्ता व्यक्त की गई। मध्याह्न ३ बजे डी०ए०वी० कालेज कमेटी के प्रधान श्री जी० एल० दत्ता की अध्यक्षता में "शिक्षा सम्मेलन" हुआ। जिसका उद्घाटन, भारत के भूतपूव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वित्तमन्त्री तथा प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री डॉ० वी० डी० देशमुख ने किया। सभा में बड़ौदा आर्य कन्या महाविद्यालय के शिल्पी तथा महान् शिक्षा शास्त्री श्री पण्डित आनन्द प्रिय जी, पण्डित धर्मदेव विद्या मार्तण्ड, तथा महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपने अनुसंधान पूर्ण विचार रखते हुए वर्तमान शिक्षा पद्धति को दोष-पूर्ण बताया तथा शिक्षा में धार्मिकता की अनिवार्यता बताई।

सायंकाल ६ बजे सार्वदेशिक सभा के महा मन्त्री, गो भक्त संसद् सदस्य श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में "विशाल गो रक्षा सम्मेलन" हुआ। जिसका उद्घाटन जगन्नाथ पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजन तीर्थ ने किया। सम्मेलन में सम्पूर्ण देश भर में से शीघ्र गो हत्या बन्द करने की मांग की गई। वेदों में गौ मांस भक्षण की बातें करने वालों को शास्त्रार्थ के लिए चैलेंज दिया गया। यदि गो वध तुरन्त बन्द न किया गया तो पुनः आन्दोलन चलाने की भी घोषणा की गई।

हर दृष्टि से दशम आर्य महासम्मेलन सफल रहा। इसका सबसे अधिक श्रेय कर्मवीर पण्डित नरेन्द्र जी तथा उनके साथियों को है। जिन्होंने रात-दिन एक करके सम्मेलन को शानदार ढंग से सम्पन्न कराया। प्रतिनिधियों के रहने—भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था थी। पानी का बन्दोबस्त अच्छा था। यज्ञ-शाला की मान्यता देख कर दिल आनन्द विभोर हो उठा। प्रातःकाल सात बजे जब 'यजुर्वेद महा पारायण यज्ञ" शुरू होता था—और वेद मन्त्रों की ध्वनि सुनाई देती थी—उस समय का दृश्य प्राचीन ऋषियों के आश्रमों की याद दिलाता था। आर्य साहित्य प्रकाशन संस्थाओं द्वारा जो दुकानें लगाई गई थीं; उन पर लोगों की भीड़ देख कर ऐसा लगता था कि साहित्य बिक्री काफी मात्रा में हुई होगी। इससे हमने अनुमान लगाया कि आर्यों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ रही है। हमने इसको आर्य समाज के लिए शुभ लक्षण समझा।

वस्तुतः सम्मेलन बाह्य दृष्टि से सफल रहा किन्तु आंतरिक दृष्टि से जो रोग घुन की तरह आर्य समाज को लग गए हैं। यदि वे न मिटे तो इन प्रदर्शनों से क्या लाभ ?

आज आवश्यकता है कि आर्य समाज का प्रत्येक शुभ चिन्तक आपस की फूट-ईर्ष्या द्वेष को भट्टी में जला कर ऋषि-वर दयानन्द के कार्य पूरा करने को व्रत ले।

आग में घर जल रहा हो तो पहले आग बुझाओ। सफलता का यही मार्ग है। पर क्या नेताओं की आंखें खुलेंगी ?

अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवो ह्यसि नो दृशे।

साम० १-१-१-१०

O' God (Agni), fill us with rodiant light for our great protection. Thou art refulgent and with Thine light we perceive (and realize truth).

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बागी फकीर--दयानन्द

● श्री जगन्नाथ शास्त्री, एम० ए०

महर्षि दयानन्द के उत्कष्ट राष्ट्रप्रेम के कारण अंग्रेजों ने संभवतः सबसे पहले उन्हें ही 'बागी फकीर' घोषित किया और महारानी विक्टोरिया से विशेष अनुमति लेकर अपने सी० आई० डी० इन्पेक्टर लगाए। बात दरअसल सन् १८७३ की उस समय की है जबकि लार्ड नार्थ ब्रुक गवर्नर वाइसराय से स्वामीजी का वार्तालाप हुआ। यह वार्तालाप अभी भी टेप रिकार्ड पर सुरक्षित है। लार्ड ने स्वामीजी से प्रार्थना की कि वे अपने भाषणों में अंग्रेजी राज्य के चिरस्थायी रहने की प्रार्थना किया करें।

स्वामीजी ने उन्हें बड़े दृढ़ शब्दों में कहा—यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबोध राजनीतिक उन्नति और संसार के राज्यों में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। श्रीमान् जी ईश्वर से नित्य सायं-प्रातः उसकी अपार कृपा से इस देश की विदेशियों की दासता से मुक्ति की ही प्रार्थना करता हूँ।

सन् १८८५ में बनी कांग्रेस मंच से दादाभाई नौरोजी, गोखले, तिलक, मालवीय, सुभाष और गांधीजी आदि ने भी इस क्षेत्र में कार्य किए परन्तु इन सबके प्रेरणा-स्रोत महर्षि ही थे। श्रीमती एनी विसैण्ट ने स्वामीजी को स्वराज्य का प्रथम मंत्रदाता स्वीकार किया है और अनन्तशयनम् आयंगर तो उन्हें राष्ट्र-पितामह मानते हैं।

स्वामीजी के अमरग्रन्थ—'सत्यार्थ' प्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदभाष्य, आदि में उनका यह राष्ट्रप्रेम स्पष्टः प्रकट होता है।

स्वदेशी राज्य-सर्वोपरि उत्तम

कांग्रेस निर्माण से भी तीन वर्ष पूर्व १८८२ में सत्यार्थप्रकाश में आपने लिखा कि जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा हो अपने राज्य की तुलना नहीं कर सकता।

स्वामीजी देश की पराजय का कारण आपस की फूट, अब्रह्मचर्य, अविद्या, बाल विवाह, अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषण, वेद विरहितना मानते थे और इसीलिए उन्होंने समाज में से इन कुरीतियों को दूर करने के लिए जीवन पर्यन्त न केवल प्रयास किया वरन् आर्यसमाज की स्थापना भी इसी उद्देश्य से की। यही कारण है कि अंग्रेजों के लिए आर्यसमाज सदा सिरदर्द रहा और आर्य समाज क्रान्तिकारियों का जनक बन गया।

स्वदेश आन्दोलन

लोग शायद बंग भंग या गांधीजी के चर्खा-यज्ञ से स्वदेशी आन्दोलन को मानते हैं परन्तु १८७५ से ही आर्यसमाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने स्वदेशी वस्त्र और स्वदेशी वेशभूसा का आन्दोलन शुरू कर दिया था।

स्वामीजी की ये पंक्तियाँ स्वदेशी आन्दोलन को चिरस्थायी बनाए रखेंगी, जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब मिलकर प्रीत से करें।

धर्म परिवर्तन

स्वामीजी अंग्रेजों द्वारा हिन्दू धर्म-परिवर्तन से अत्यन्त दुःखी थे। उन्होने अपने एक पत्र में लिखा था कि यह बड़े शोक की बात है कि जयपुर में अनेक गिरजाघर बन गए और पादरी राम, कृष्ण आदि भद्र पुरुषों की निरन्तर निन्दा करते हैं और सैकड़ों को बहकाकर-भ्रष्ट कर रहे हैं उनको हटाने कों पंडित और राजा आदि राज-पुरुषों ने कुछ भी प्रयत्न नहीं किया।

इसीलिए स्वामीजी ने शुद्धि आन्दोलन का संदेश दिया। यदि वे न होते तो शायद आज देश में शिला-सूत्र का नाम निशान न मिलता। स्वामीजी का यह दृढ़ मत था कि धर्म-परिवर्तन से न केवल संस्कृति और धर्म परायणता बदल जाती है अपितु राष्ट्रीयता भी बदल जाती है।

स्वामीजी एकात्म शासन के समर्थक थे। किन्तु वह किसी एक प्राणी को राजा बनाने के विरुद्ध थे। उनका मत था कि एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा, जो सभापति तदधीनसभा, सभाधीन राजा और सभा प्रजा के आधीन प्रजा राजसभा के अधीन रहे।'' तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिए, एक मनुष्य को कभी नहीं। उनकी राय में तीन सभाएँ—राजसभा, विद्यासभा और धर्म सभाएँ होनी चाहिए। जिसके विद्वान् और धार्मिक पुरुष सदस्य हों। वे धर्म सहित राजनीति के समर्थक थे।

स्वामीजी ने भारत के किसान आदि परिश्रमी व्यक्तियों को ही राजाओं का राजा घोषित किया उन्होंने राजा व राजपुरुष को स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे प्रजा की साधारण सम्मति के विरुद्ध न हो। परन्तु सम्मति देने का अधिकार स्वामीजी केवल उसी का मानते थे जो सुशिक्षित, और धार्मिक हों। उनकी राय थी कि जो मूर्खों के कहे हुए धर्म के अनुसार चलते हैं उनके पीछे सैकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं।

यद्यपि स्वामीजी कड़े-से-कड़े दण्ड के समर्थक थे परन्तु उनका मन था कि धान्य का निकालने वाला छिलकों को अलग कर धान्य की रक्षा करता है अर्थात् टूटने नहीं देता है। वैसे राजा डाकू, चोरों को मारे और राज्य की रक्षा करें।

स्वामीजी ने स्वराज्य के लिए और अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए शौर्य, धैर्य, नीति विनय, पराक्रम और बल आदि का उत्तम गुण माना।

हिन्दी

गुजराती होते हुए भी स्वामीजी ने अपने ग्रन्थ हिन्दी और कुछ संस्कृत में लिखे। वे हिन्दी के साथ सभी देशी भाषाओं को प्रोत्साहन देना चाहते थे। उनका मत था कि जब पाँच-पाँच वर्ष के लड़का-लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी।

स्वामीजी हिंसा और चोरी, विश्वास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घात और छल-कपट, रिश्वत आदि से प्राप्त भोग को अभक्ष्य मानते थे। ··· व्यवहार तथा खान-पान में समानता के पक्षपाती थे : उन्होंने एक व्याख्यान में कहा था कि हमारे यहाँ पूर्व से ही ऋषि, मुनि, ब्राह्मण. क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते थे।

गो-हत्या बन्दी

गो हत्या बंदी के लिए स्वामीजी ने करोड़ों भारतवासियों से हस्ताक्षर करा-कर गवर्नर जनरल और महारानी विक्टोरिया को भेजे थे। उनका मत था कि एक गाय को मारने और मरवाने से ४२,०००० मनुष्यों के सुख की हानि होती है :

मूर्ति भंजक नहीं

मूर्ति पूजा विरोधी होते हुए भी भंजक नहीं थे : बरेली का शिव मंदिर इस बात का सजीव प्रभाव है। जिला-धिकारियों ने उन्हें कहा कि यदि वे सड़क के इस शिव मंदिर को हटा दें तो जनता को क्रोध नहीं उभरेगा। स्वामीजी ने बड़े शब्दों में कहा था कि मैं मूर्ति पूजा विरोधी अवश्य हूँ परन्तु मूर्ति भंजक नहीं। यदि मंदिर पर प्रहार किया गया तो दयानन्द पहला व्यक्ति होगा जिस पर पहला प्रहार होगा। समाज सुधार के नाते उन्होंने बुद्धि आन्दोलन, विधवा विवाह चलाए दूसरी ओर बाल विवाह का विरोध किया।

मृत्यु का पूर्वाभास

योगी होने के कारण स्वामीजी को अपनी मृत्यु का दो वर्ष पूर्व ही पूर्वाभास हो गया था। सन् १८८२ में अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा को एक वसीयतनामा लिखा था। इस वसीयतनामे की प्रतियाँ तत्कालीन लोक प्रिय पत्र 'थियोसोफिस्ट' के सम्पादक को भी भेजी थी और कहा था कि सन् १८८४ हम नहीं देखेंगे। स्वामीजी की मृत्यु के बाद उक्त पत्र के सम्पादक ने अपने पत्र में इसका उल्लेख किया है।

तेरी इच्छा पूर्ण हो

स्वामीजी ने अपने जीवन पर्यन्त जिस प्रकार अज्ञान-अन्धकार को मिटाया, मरने पर भी उसी प्रकार पं० गुरुदत्त एम० ए० जैसे वैज्ञानिक नास्तिक को आस्तिक बना दिया।

वस्तुतः आज भी जबकि भारत स्वतंत्र है, स्वामीजी के उत्कट राष्ट्रप्रेम गौ, हिन्दी प्रेम को घर-घर पहुँचाने की आवश्यकता है।

अद्याऽद्या श्वः श्व इन्द्र त्रास्व परे च नः। विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते
अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः॥ साम० २-१४५६

O' God (Indra), protect us today, tommorrow, thereafter and everyday. O' Protector of the good, protect us—The worshippers—during day and night.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मृत्यु का सौन्दर्य

मन्त्रमुक्ताहार

२

श्री सत्यपाल

"वेदशिरोमणि"

यह लेख पृथक ट्रैक्ट रूप में भी प्रकाशित किया गया है।

मूल्य १०) सैकड़ा

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धरती
धरती का गीत
गीत

बालकृष्ण गुप्त, एम० ए०

एक समय था जब जीवन में कोयल मुझे पुकारा करती।
एक समय था जब झोली में कलियाँ आ-आकर थीं गिरती॥
जीवन में मधुमास स्वयं ही, बिना बुलाए आ जाता था।
जीवन सुरभित आ फूलों सा, मौसम हिला-हिला जाता था॥

सपनों की इस दुनियाँ में मैं जीभर आँख-मिचौनी खेला।
भूल गया कटु सत्यों को मैं, भूल गया जीवन का लेखा॥
जीवन की परिभाषा बदली, सपने सारे भूल गया मैं।
धरती पर जब पैर टिकाए, जीवन को पहचान सका मैं॥

आज देखता हूँ कोई भी पिछला साथी नजर न आता।
निपट अकेला हूँ जीवन में, कोई मौसम पास न आता॥
मेरे जीवन के लेखे पर प्रश्न-चिह्न-सा लगा हुआ है।
कर्त्तव्यों का क्षेत्र आज नजरों के सम्मुख पड़ा हुआ है॥

जीना है तो जीवन की कटुता को भी तो पीना होगा।
जीना है तो व्यथित हृदय के भावों को भी सीना होगा॥
मेरे मत में जो फर्जों से हटते वह कायर मानव हैं।
जीवन के ज्वलंत प्रश्नों का जो उत्तर देते-- मानव हैं॥

केवल परियों की दुनियाँ में विचरण करना कायरता है।
धरती के जीवन से उन्मुख होकर जीना कायरता है॥
जो धरती के मानव के सुख को, दुःख को भी गा सकता है।
वही तड़फती मानवता का वरद् हस्त भी पा सकता है॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मृत्यु का सौन्दर्य

●

अथर्ववेद ५.३०.१७

ओ३म्, अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः।
यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः पुरुष जज्ञिषे।
स च त्वानुह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः॥

Om, Ayam Lokah Priyatamo Devaanaamaparaajitah.
Yasmai Tvamiha Mr.tyave Dishtah Purusha Jajnishe.
Sa Cha Tvaanuhvayaamasi Maa Pura Jaraso Mr.thaah.

पदपाठः

अयम्। लोकः। प्रियतमः। देवानाम्। अपराजितः। यस्मै। त्वम्। इह। मृत्यवे। दिष्टः। पुरुष। जज्ञिषे। सः। च। त्वा। अनु। ह्वयामसि। मा। पुरा। जरसः। मृथाः।

अभिगमः

१. अयम्—Ayam=यह This

२. लोकः—Lokah—क्षेत्र, देश, राज्य, विश्व, विश्ववासी-मानव, समाज, जीवन, शरीर सांसारिक व्यवहार, दृष्टि शक्ति।
A tract, region, district, country, province, the universe; also inhabitants of the world, mankind; a company or community; ordinary life; worldly affairs, common practice or usage; the faculty of seeing, sight. [cf. Lat. LUCUS:···Lith, LAUKAS, a field]

टि०— यह शब्द "लोक् दर्शने" धातु से बना है। संभवतः आंग्लभाषा का "LOOK" इसी "लोक्" का ही रूपान्तर है।

३ प्रियतमः—Priyatamah=सबसे प्रिय, प्रसन्न करने वाला, आनन्द देने वाला, Dearest, most delighting, pleasing.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. देवानाम्— Devaanaam = "दिवु क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युति स्तुति मोद मद स्वप्न कान्ति गतिषु" इस धातु से 'देव' शब्द बना है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में 'देव' शब्द से परमात्मा के जिन गुणों का वर्णन किया है उनके आधार पर "देव" स्वरूप मनुष्य के निम्न गुण कहे जा सकते हैं—

The Word 'DEVA' is derived from 'Divu.' Maharshi Dayanand has explained this in detail in his famous book 'Satyarth prakash'. There he has noted down the virtues and acts of the God, on that basis we may note the virtues, of a godly peroon as under :—

१. जो खेलते हुए हँसी खुशी से जीवन बिताए। One who spends his life playfully, is all smiles and of a sportsman spirit.

२. जो सब को जीते पर स्वयं अजेय रहे। One who wins over all but himself remains unconquered.

३. जो न्याय और अन्याय को जान कर सदा न्याय पूर्वक व्यवहार करे। One who is just in his behaviour.

४. जो ज्ञान से प्रकाशित हो और दूसरों को भी ज्ञान से प्रकाशित करे। One who, himself being enlightened, propagates knowledge and enlightens others.

५. जो सबसे स्तुत्य हो। One who is appreciated by all.

६. जो स्वयं आनन्द में रहे और दूसरों को आनन्द दे। One who is always happy and makes others happy.

७. सदा हर्षित, शोक रहित। Ever pleased, devoid of worries & sufferings.

८. जो निश्चिन्त होकर गाढ निद्रा ले। One who is free from worries and has a sound sleep at night.

९. सत्य और कल्याण की कामना करने वाला। One who is desirous of getting truth and interested in others' welfare.

१०. जो प्रगतिशील हो। One who is ever progressing.

श्रीमद्भगवद्गीता के १६वें अध्याय में भगवान् कृष्ण ने 'देव' मनुष्य के निम्न गुण बतलाए हैं :—

निर्भयता, अन्तःकरण शुद्धता, ज्ञान और योग में निरन्तर दृढ़ स्थिति, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, चुगली न करना, प्राणियों पर दया, अनासक्ति, कोमलता, लज्जा, अचंचलता, तेजस्विता, क्षमा, धैर्य, पवित्रता। अद्रोह और अहंकार न होना। इन गुणों से युक्त मनुष्य ही देवता कहलाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Bhagawan Krishna has enumerated the virtues of a godly person as under:—

Fearlessness, absolute purity of heart, constant absorption of mind in Jnana & Yoga, Sattvic form of charity, control of the senses, worship (of God as well as superiors) and the performance of Agnihotra (pouring oblations into the sacred fire) and other good acts, study of the Vedas and other sacred texts, bearing of hardships for the sake of one's own Dharma and straightness of mind, non-violence in thought, word and deed, truthfulness and geniality of speech, absence of anger even on provocation, renunciation, tranquility, refraining from malicious gossip. Kindness to all creatures, absence of attachment, mildness, sense of shame in doing things not sanctioned by the scriptures abstaining from idle pursuits, sublimity, forgiveness, fortitude, purity, absence of malice, absence of the feeling of self—importance, these are the marks of one who is naturally endowed with divine virtues.

५. अपराजितः—Aparaajitah=जो पराजित न हो, unconquered.
६. यस्मै—Yasmai=जिसके लिए unto what
७. त्वम्—Tvam=तू thou
८. इह— Iha=इस संसार में, in this world
९. मृत्यवे—Mr.t.yave=मृत्यु के लिए, unto death
१०. दिष्टः—Dishtah=निर्दिष्ट हुआ, appointed
११. पुरुष—Purush=(पुरि अस्मिन् शरीरे शेते वसति इति पुरिशयः पुरुषः—जीवात्मा)
जीवात्मन् ! (जिसने इस शरीर को अपना निवास स्थान बना रखा है)
O soul ! (who has made this body his abode)
१२. जज्ञिषे – Jajnishe=शरीर धारण करते हो, get in the body, get appearance.
१३. सः—Sah=वह मृत्यु, that death
१४. च—Cha=निश्चय से, undoubtedly
१५. त्वा—Tvaa—तुम्हें Thee
१६. अनु —Anu=अनुगमन करे, may follow
१७. ह्वयामसि—Hvayaamasi=हम कहते हैं, we say
१८. मा —Maa=मत, do not
१९. पुरा—Puraa=पहले, earlier
२०. जरसः—Jarasah=जीर्ण होने से, than wearing out
२१. मृथाः—Mr.thaah=मरना, die

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्वयः

अयम् अपराजितः लोकः देवानाम् प्रियतमः ! पुरुष । यस्मै मृत्यवे दिष्टः त्वम् इह जज्ञिषे सः च त्वा अनु । ह्वयामसि जरसः पुरा मा मृथाः ।

भावार्थः

यह अपराजित लोक (शरीर, समाज और संसार) देवों के लिए सर्वाधिक आनन्दमय और आनन्द दायक है । हे आत्मन् ! जिस मृत्यु के लिए निर्दिष्ट होकर तू इस संसार में जन्म लेता है वह निश्चय ही तेरे पीछे चले । जराजीर्ण होने से पूर्व मत मरना यही हम तुमसे कहते हैं ।

This unconquered LOKA (the body, community and the world) is the happiest and the most pleasing one for those who have got divine virtues, are godly persons. O Soul! thou, who art born in this world only after being appointed unto death, let that death follow thy steps and not precede thee any way. We call upon thee not to die before thou art totally worn out.

WILLIAM DWIGHT WHITNEY

"This is the dearest world of the gods, unconquered. Unto what death appointed, O man, thou art born here, we and it call after thee, do not die before old age."

"मृत्यु" यह एक ऐसा शब्द है कि सुनते ही मनुष्य और प्राणी भयभीत से हो जाते हैं । संसार एक तरह से चल ही इसलिए रहा है कि सब यहां मृत्यु से डरते हैं और उसको दूर रखने के प्रयास में अपनी सारी शक्ति और अपना सारा जीवन होम किए दे रहे हैं । न होती यदि मृत्यु, तो शायद पेट भरने का यह खेल भी देखने को नहीं मिलता । एक बार पेट भर लेने के बाद मनुष्य यह समझने लगता है कि मैं मृत्यु के पंजों से दूर हो गया, और तब कुछ और अपनी तृप्ति के साधन जुटाने लगता है । भूखे पेट तो शृंगार भी किसी को नहीं भाता । और यह मृत्यु-भय संसार का सबसे बड़ा भय है । मनुष्य सोचता है—मृत्यु आएगी तो मेरी गर्दन मरोड़ देगी, मेरी नसें ऐंठ देगी, उसके क्रूर हाथों में इतनी शक्ति है, उसके लौह पंजों की मज़बूती इतनी है कि एक बार उसके हाथ कसते चले जाएं तो फिर बस छुड़ाना मुश्किल है, इसीलिये उसके शिकंजों में पड़ा हुआ शिकार तड़पता है, छटपटाता है और अन्त तक उसके शिकंजों से छूटने का प्रयास करता रहता है और अन्त में उसमें जब कुछ भी शक्ति नहीं रह जाती, पूरा निचुड़ जाता है तो हाथ पैर फैलाकर पस्त-सा पड़ जाता है । और सामान्य मनुष्य स्वप्न में भी जब मृत्यु को देखता है तो उसकी कराल आंखों को जिनमें कि लाल डोरे दूर से ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आग बरसाते से दिखाई देते हैं, काला स्याह रंग, पतले-पतले लम्बे-लम्बे हाथ, पतले-पतले लम्बे-लम्बे पैर, कंकाल अवशिष्ट शरीर आदि को देखता है और भय ही भय में यह महसूस करने लगता है कि वह बस मेरी ओर आ रही है, कैसे दांत किटकिटा रही है, कैसी लम्बी जीभ निकाले आ रही है, बाल बिखरे हैं, और वे बाल भी काले नहीं सफेद और काले मिले-जुले ! ऐसी भयानक मूर्ति को देखते ही स्वप्न देखने वाले के आधे प्राण तो वैसे ही सूख जाते हैं और वह चिचियाने सा लगता है·····।

क्या वास्तव में मृत्यु इतनी रौद्र रूप वाली है ? इतनी कर्कश, निर्मम, निर्दय और क्रूर है ? क्या कई घटनाएं ऐसी सुनी या देखी नहीं हैं कि जिनमें एक व्यक्ति (स्व० कपूर जी की तरह) रात को अच्छा खा-पी कर सोया, सोने से पहले तक बातचीत करता रहा, और सोने से पहले सबको अतिप्रेम से विदा करके वह जो चश्मा चढ़ा कर सोया तो ऐसा सोया कि पता ही नहीं चला कब चिर निद्रा में लीन हो गया। चश्मा तक उतारने का अवसर नहीं मिला और चेहरे या मुंह पर एक भी रेखा ऐसी नहीं खिची थी कि देखने वाला मृत्यु की कोई शंका भी कर सके—कैसी शान्त मृत्यु है—संसार कहता है हार्ट फेल हो गया। इससे भी सुन्दर मृत्यु ! पूजा पर बैठे थे मेरे गुरु। पूजा पूरी की। पत्नी से बोले कि दूधले आओ पूजा कर चुका हूँ। अहसास तक नहीं हुआ कि कोई भयानक कांड होने वाला है। जब तक पत्नी दूध लाए, इह लीला समाप्त हो गई। पत्नी आकर देखती है कि जिसके लिए दूध लाई हूँ वह पंछी तो उसे छोड़ कर एक मिनट में ही कोसों दूर चला गया। एक आत्मा स्नेह और प्यार को साथ में लेकर चली गई, दूसरी आत्मा पूजा और भक्ति भावना को। इनको इस बात का अनुभव भी नहीं हुआ कि क्या हो रहा है। जैसे किसी ने मैस्मेरिज़्म कर दिया। दादियों की कहानियों में जैसे आकाश से परियां उतर आती हैं ऐसी ही एक परी-सी कोई आई और चुप-चाप आकर एक की आँखों को रात में बिस्तर पर और दूसरे की आंखों को अपने घर के मन्दिर में प्रातःकाल की पावन वेला में मीठे-मीठे हाथों से ऐसा बन्द कर गई कि संसार को घंटों तक उनकी मृत्यु का ही पता नहीं चला। मृत्यु इतनी ही सुन्दर नहीं है। इनमें तो जिसके पास आई उसने मृत्यु के अस्तित्व का अनुभव भी नहीं किया। सबसे सुन्दर मृत्यु तो वह है जब मृत्यु के अस्तित्व का भी पता चले, यह मालूम होता रहे कि एक-एक क्षण मृत्यु बुला रही है, पर जब तक जाने वाले की इच्छा नहीं है वह न आए और जाने वाले के बुलाने पर इस प्रकार आए जैसे कि बच्चे की पुकार पर मां आती है और बच्चे को इस प्रकार अपनी गोद में ले लेकर पुचकारने लगती है कि बच्चे की सारी थकावट उसकी गोद में दूर हो जाए—

ये तीन दृश्य हैं। इनमें से पहला दृश्य भयंकर, घोर, अति दारुण और बीभत्स। दूसरा मधुर एवं शालीन। तीसरा वात्सल्य मय। पहला दृश्य उनसे संबंधित है जो मनुष्य तो थे पर मनुष्यत्व और मानव धर्म से निकट का भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिनका वास्ता जीवनकाल में नहीं रहा। इन्हें असुर वर्ग में रखा जा सकता है। दूसरा दृश्य अच्छे पितरों से संबंधित हैं जिन्होंने अपने जीवन काल में सामान्य मनुष्य धर्म को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाया। इन्हें पितृ वर्ग में रखा जा सकता है। तीसरा दृश्य ऐसी महानात्माओं से संबंधित है जिन्होंने केवल सामान्य धर्म को ही नहीं निभाया अपितु अधार्मिक, नास्तिक, अज्ञान-मय संसार में धर्म, आस्तिकता तथा ज्ञान की अपने मन, वाणी तथा कर्म से स्थापना की तथा सैंकड़ों व्यक्तियों का उपकार करके उन्हें भी कल्याण-पथ पर लगाया। इन्हें हम देव वर्ग या ऋषि वर्ग में रख सकते हैं। देखिए यह तीसरा दृश्य—

"···इतने कष्ट में भी ऋषि का धैर्य आश्चर्यजनक था। उसे देखकर मित्र और शत्रु दांतों तले उंगली दबाते थे। इतना कष्ट और 'आह' तक नहीं। धैर्य से रोग को सह रहे थे और पूछने पर केवल यथार्थ दशा बतला देते थे। शरीर छालों से भरा हुआ था, बोलने में असह्य कष्ट होता था, हिलना, डोलना भी कठिन हो रहा था, ऐसी दशा में भी ऋषि के मुंह पर न घबराहट थी और न खिझलाहट थी। वही गम्भीर चेहरा था और वही शांत मुद्रा थी। जिन लोगों ने उस दशा में स्वामी जी को देखा, उन्होंने अनुभव किया कि इस मनुष्य में अवश्य ही कोई दिव्यशक्ति काम कर रही है। उनके हृदयों पर यह बात अंकित हो गई कि इस महापुरुष के हृदय में निश्चय से परमात्मा की शक्ति निवास कर रही है।

ऋषि का मृत्यु समय निकट आ रहा था। इलाज और सेवा कुछ परि-वर्तन पैदा न कर सके। स्वामी जी को अजमेर ले आया गया।

"रेल से उतार कर स्वामी जी को पालकी में लिटा दिया गया, और सावधानी से उन्हें एक कोठी में ले गए, जो पहले से इस काम के लिए नियत कर रखी थी। उस समय रात के तीन बजे थे। अक्तूबर का अन्त था, लोगों को सर्दी मालूम देती थी परन्तु स्वामी जी के मुंह से 'गर्मी, गर्मी' का शब्द निकलता था। कोठी के सब दरवाजे खुलवा दिए गए तब भी स्वामी जी को शान्ति न हुई। दूसरे दिन डा० लक्ष्मणदास जी का इलाज शुरू हुआ, पर उनकी दशा में कुछ भी अन्तर न हुआ। एक बार स्वामी जी ने अपने शिष्यों से कहा कि हमको मसूदा ले चलो, इस पर सब ने कहा कि आराम होने पर हम आपको वहां पहुँचा देंगे, इस दशा में बार-बार यात्रा करना उचित नहीं है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि दो दिन में हमको पूरा आराम पड़ जाएगा। वह उत्तर स्मरण रखने योग्य है। अब स्वामी जी के सारे शरीर में छाले ही छाले दीखने लगे। २९ अक्तूबर को स्वामी जी का शरीर अत्यन्त ही निर्बल हो गया। अपने सेवकों से कहा कि हमें बिठा दो। जब बिठाया गया तो कहा कि छोड़ दो, हमें सहारे की आवश्यकता नहीं है। सो कितनी देर तक बिना सहारे के बैठे रहे। उस समय सांस जल्दी-जल्दी चल रहा था पर स्वामी जी उसे रोक कर बल से फेंक देते थे, और ईश्वर के ध्यान में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मग्न हो रहे थे। रात को कष्ट अधिक रहा। दूसरे दिन ३० अक्तूबर को डाक्टर न्यूमन साहब बुलाए गए। जिस समय उक्त डाक्टर साहब ने स्वामी जी को देखा तो बड़े आश्चर्य से कहने लगे कि धन्य है इस सत्पुरुष को, हमने आज तक ऐसा दिल का मजबूत कोई दूसरा मनुष्य नहीं देखा कि जिसको इस प्रकार नख से शिख तक अपार पीड़ा हो और वह तनिक भी आह या ऊह न करे। उस समय स्वामी जी के कण्ठ में कफ की बड़ी प्रबलता थी, जिसकी निवृत्ति के लिए डाक्टर न्यूमन ने कई उपाय किए, परन्तु उनसे कुछ लाभ न हुआ। ११ बजे दिन के स्वामी जी का श्वास विशेष बढ़ने लगा, और कहा कि हम शौच जाएंगे। उस समय स्वामी जी को चार आदमियों ने उठाया, और शौच करने की चौकी पर बिठा दिया। शौच गए, और आप पानी लिया। हाथ धोये, दातन की और कहा कि अब हमको पलंग पर ले चलो। आज्ञानुसार पलंग पर ला बिठाया। कुछ देर बैठकर फिर लेट गए। श्वास बड़े वेग से चलता था, और ऐसा प्रतीत होता था कि स्वामी जी श्वास को रोक कर ईश्वर का ध्यान करते हैं। उस समय स्वामी जी से पूछा गया कि "महाराज, कहिए, अब आपकी तबियत कैसी है ?" कहने लगे कि "अच्छी है, एक मास के पीछे आज का दिन आराम का है।"

"इस समय लाला जीवन दास जी ने, जो लाहौर से स्वामी जी को देखने अजमेर गए थे, स्वामीजी से अभिमुख होकर पूछा कि महाराज, "इस समय कहाँ हैं ?" स्वामीजी ने उत्तर दिया "ईश्वरेच्छा में।"

"उस समय श्रीयुत के मुख पर किसी प्रकार का शोक या घबराहट प्रतीत नहीं होती थी। ऐसी वीरता के साथ दुःख को सहन करते थे कि मुंह से कभी हाय या शोक नहीं निकला। इसी प्रकार स्वामीजी को बातचीत करते-करते पांच बज गए, और बड़ी सावधानता से रहे। इस समय हम लोगों ने श्रीयुत से पूछा कि कहिए, अब आपकी तबियत कैसी है ? तो कहने लगे कि "अच्छा है, तेज और अन्धकार का भाव है। (तेज है परमात्मा का प्रकाश और अन्धकार है मृत्यु, जीवन के सुदूर क्षितिजमें जैसे दोनों का एकत्र दर्शन हो रहा हो—लेखक)। इस बात को हम कुछ न समझ सके क्योंकि स्वामीजी इस समय सरल बातचीत कर रहे थे। साढ़े पांच बजे का समय आया तो हम लोगों से स्वामी जी ने कहा कि अब सब आर्यजनों को, जो हमारे साथ और दूर-दूर देशों से आये हैं, बुला लो और हमारे पीछे खड़ा कर दो। कोई सम्मुख खड़ा न हो, बस आज्ञा पानी थी, वही किया गया।

"जब सब लोग स्वामीजी के पास आ गए, तब श्रीयुत ने कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो और ऊपर की छत के दो छोटे-छोटे द्वार खोल दो। इस समय पांड्या विष्णुलाल मोहनलाल भी श्रीमान् उदयपुराधीश की आज्ञानुसार आ गए। फिर स्वामी जी ने पूछा कौन-सा पक्ष है, क्या तिथि और क्या वार है ? किसी ने उत्तर दिया कि कृष्ण पक्ष और शुक्लपक्ष की सन्धि अमावस मंगलवार है। (तेज और अन्धकार का भाव—परमात्मा और मृत्यु से एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साथ भेंट—शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की संधि—क्या यह सब सांयोगिक है ? —लेखक)।

यह सुनकर कोठी की छत और दीवारों की ओर दृष्टि करके, फिर पहले वेदमन्त्र पढ़े, तत्पचात् संस्कृत में ईश्वर की कुछ उपासना की, फिर भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा-सा कथन कर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष सहित गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे, तत्पश्चात् हर्ष और प्रफुल्लित चित्त सहित कुछ देर तक समाधियुक्त नयन खोल यों कहने लगे कि, **"हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा ! तूने अच्छी लीला की।"** बस, इतना कह स्वामी जी महाराज ने, जो सीधे लेट रहे थे, **स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वास को रोक कर एक बार ही निकाल दिया।"** —(आर्य धर्मेन्द्र जीवन)

यह है मृत्यु का मातृत्व रूप। मृत्यु भी किसी के शासन से अपना कर्तव्य पूरा कर रही है। ऐसी आज्ञा पालन करने वाली जननी को क्यों बुरा कहा जाए। उसे क्यों भयानक समझा जाए ? मृत्यु आई तो मानो जैसे ऋषि कह रहे हैं "मां, अभी से।"

"हाँ, बेटा, और कितने दिन इस शरीर से तुम्हारा काम चलेगा, मैं तुम्हें नहला धुला करके नए कपड़े पहना दूँगी और अभी जिन कपड़ों को विष देकर, पत्थर मार कर, कीचड़ फेंक कर, कांटों में फँसा कर दुनिया ने जीर्ण शीर्ण कर दिया है, बेटे ! इसके स्थान पर मैं तुम्हें इतना सुन्दर वस्त्र दूँगी कि दुनिया तुम्हारे पुराने शरीर को भूल-भाल कर ढोल बजा-बजा कर तुम्हारे स्वागत में नाचने-कूदने लगेगी।"

"पर मां अभी कुछ और भी मैं काम करना चाहता हूँ।"

"वत्स, तुम्हारे पिता का भी आदेश आ गया है न। मैं क्या करूँ ?"

"ऐसी बात है मां ! तो मैं पिता जी से पूछ कर देख लूँ।".....

"पिता मेरे ! क्या तुम्हारी यही इच्छा है।"

—"हां बेटा चले आओ। अब काफी खेल चुके हो। रात होने आ गई है। फिर कल तेरे नए जीवन का सवेरा होगा तब तक तेरी मां तुझे नहला धुला कर अच्छे कपड़े पहना कर बढ़िया सजा देगी। है न ? मेरे अच्छे बच्चे चले आओ।".....महर्षि दयानन्द जी के अन्तिम वाक्य "तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो," "में मुझे तो इतना लम्बा संवाद मृत्यु, महर्षि और परमात्मा के बीच हुआ लक्षित होता है। और फिर जब महर्षि ने श्वास रोक कर एक साथ बाहर (जान-बूझ कर) निकाल डाला तो मानों उन्होंने मां (मृत्यु) को बुलाया और "अच्छा मां ! पिता से बात-चीत हो गई, मैं भी आपके साथ अभी चल रहा हूँ" कह कर एक बारगी अपने आपको मां के मधुरतम अंक में डाल दिया। कैसा सुन्दर समर्पण है और इस दशा में मृत्यु कितनी सुन्दर है।

तो क्या मृत्यु स्वभावतः सुन्दर है ? निश्चित रूप में। मृत्यु तो असुन्दर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कभी हो ही नहीं सकती ? इतने बूढ़े जरा जीर्ण शरीर को स्नेह के अवलेपन से बिल्कुल शिशु रूप देकर आत्मा को नया जीवन, नया उत्साह, नई स्फूर्ति और नया संसार देने वाली मां और वह असुन्दर !!! यह तो हमारी मूर्खता है कि हम अपने जीवन काल के क्रूर कर्मों से, स्वार्थ, अहंकार, लोभ, अज्ञान तथा मूर्खता भरी इच्छाओं के कारण इतनी सुन्दर मां को भी क्रूर बना लिया करते हैं। नालायक बच्चे को माँ पीटे नहीं तो और क्या करे ? और फिर बच्चा कहे कि मेरी मां तो बड़ी मारने वाली है तो इसमें मां का क्या दोष ?

"कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।"

देव और ऋषि वर्ग के मनुष्यों की आत्मा —

"मुञ्जादिषीकेव" - कठोपनिषद्

"उर्वारुकमिव बंधनात्" - यजुर्वेद

मुंज से इषीका (रेशे) की तरह और डाली से पके हुए खरबूजे की तरह अलग हो जाया करती है। हम यह गलत सोचते हैं कि मृत्यु मनुष्य को तड़पा रही है। मृत्यु तो केवल वियोग करने वाली एक शक्ति-मात्र है। यह तो मेरा अपना स्वार्थ, लोलुपता, अहंकार, अतृप्ति और असन्तोष है जो आत्मा को शरीर में खींचे रखना चाहता है। आत्मा को एक तरफ मृत्यु खींचती है और दूसरी ओर स्वार्थ और अतृप्ति और दोनों की खैंचा-खैंची में मनुष्य तड़प उठता है। मृत्यु तब खींचती है जब वह मनुष्य के आगे-आगे चल रही हो और अन्तिम बिन्दु पर मनुष्य से पहले पहुँच जाये और मनुष्य उसके कोमल मधुर अंक में स्वयं न जाना चाहे। जब मनुष्य अपने ही जीवन काल में मृत्यु से आगे बढ़ जाता है, मृत्यु का अनुगामी बनने के बजाए मृत्यु को अनुगामिनी बना लेता है और अन्तिम बिन्दु पर मृत्यु से पहले पहुँच कर अपनी स्वेच्छा से और अपने इष्ट समय पर मृत्यु को बुलाता है तो मृत्यु उसे खींचती नहीं है, वह उसकी स्वामिनी न होकर अनुचरी हो जाती है। ऐसा तब होता है जब आत्मा का अपने परम पिता से निकट सम्पर्क हो। जिस आत्मा का परम-पिता से निकट सम्पर्क हो जाता है, मृत्यु, खुद उसके पीछे हो जाती है, अनुचरी हो जाती है। नहीं तो क्या, परमात्म-भक्त के आगे चल कर उसे मार खानी है ? और ऐसा करना तो सभ्यता के भी विरुद्ध है। इस समय वह आत्मा उसके स्वामी का अतिथि जो हुआ, प्रिय पुत्र जो हुआ। कैसा सुन्दर सन्देश है मन्त्र का। **जिस मृत्यु के लिए निर्दिष्ट होकर तुम इस संसार में शरीर धारण किया करते हो, ऐसा प्रयत्न करो कि वह मृत्यु "त्वा अनु" तुम्हारी अनुचरी बन जाए।** और याद रखना तब तो मृत्यु को न बुला तुम्हारे हाथ में होगा। इसलिए तब तक उसे न बुलाना जब तक तुम बिल्कुल जीर्ण-शीर्ण और अशक्त न हो जाओ। "मा पुरा जरसो मृथाः" स्पष्ट बतला रहा है कि मृत्यु को कब बुलाना है और कब नहीं, यह तुम्हारे हाथों में है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि मैं मृत्यु के सामने विवश ही हूँ तो परमात्मा का मेरे लिए ऐसा कहना व्यर्थ है।

पर, मृत्यु को जब चाहे तब बुलाए ऐसी शक्ति तभी मिल सकती है जब हम देवता बनें। देवता बनने के लिए हमें जड़ देवों की चर्या का अनुकरण करना होगा और उन्हीं की तरह हमें भी अपना ब्रह्मा, पुरोहित या आचार्य परमात्मा को बनाना होगा। तब यह लोक हमें प्रियतम दिखाई देगा। जिसे जीवन काल में लोक-प्रियतम दिखाई देगा, निश्चित ही उसे मृत्यु मां के रूप में दिखाई देगी। परन्तु यह लोक-शरीर प्रियतम कब दिखाई देगा जबकि वह "अपराजित" हो। काम क्रोधादि शत्रुओं से जो पराजित न हो सका हो। जिसका शरीर अयोध्या रूप हो। उस अयोध्या का राम इन्द्रियों पर अपने प्रहरी बिठा कर उन नवों द्वारों के कपाटों को ज्ञान की सांकल से बन्द करके भक्ति की अर्गला लगा देता है और फिर सुख की नींद सोता है क्योंकि उसमें अब काम क्रोधादि के घुसने की शंका नहीं होती। और जो अपने शरीर को "स्वर्णमयी लंका" बना लेता है उसकी आत्मा रावण का रूप धारण कर लेता है और अन्ततोगत्वा उसे मृत्यु खींच कर ऐसा फेकती है कि पता भी नहीं चलता कि कहाँ गई?

इसलिए मृत्यु तो सुन्दर-अतिसुन्दर, मधुर-अतिमधुर है। वह देवी है, मां है, वात्सल्यमयी है। हमें ऐसा बनना होगा कि हम उसके लिए वत्सल बनें, अपने जीवन में ऐसे कर्म कर जाएं कि अन्तिम बिन्दु पर हम आगे हों और मृत्यु हमारे पीछे; वह लाल डोरे वाली आँखों से न देख कर हमें अपनी पलकों में बिठा ले, खींच कर फेंकने के बजाए हमें अपने मधुरतम अंक में भर ले—

"मृत्यु, अरी चिर-निद्रे! तेरा अंक हिमानी-सा शीतल,
तू अनन्त में लहर बनाती काल जलधि की सी हलचल।
महानृत्य का विषम सम, अरी अखिल स्पन्दनों की तू माप,
तेरी ही विभूति बनती है सृष्टि सदा होकर अभिशाप।
अन्धकार के अट्टहास सी मुखरित सतत चिरन्तन सत्य,
छिपी सृष्टि के कण-कण में तू यह सुन्दर रहस्य है नित्य।
जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील घन माला में,
सौदामिनी सन्धि-सा सुन्दर क्षण भर रहा उजाला में।

—श्री जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' में

●

"अहमिन्द्रो न पराजिग्ये"—ऋक्
मैं इन्द्र हूँ, कभी भी किसी से पराजित नहीं हुआ।

"न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन"—ऋक्
मृत्यु के मुकाबले में मैं कभी कमज़ोर नहीं पड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दारेसलाम हवाई अड्डे पर हवाई जहाज से उतरते हुए महात्मा आनन्द स्वामी जी

आर्यसमाज के स्वनामधन्य

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी

की

अफ्रीका यात्रा

का

सचित्र परिचय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हवाई अड्डे पर पूज्य महात्मा जी का भव्य स्वागत करते हुए दारेसलाम आर्य समाज के अधिकारी। प्रो० दलीप वेदालंकार साथ में दिखायी पड़ रहे हैं।

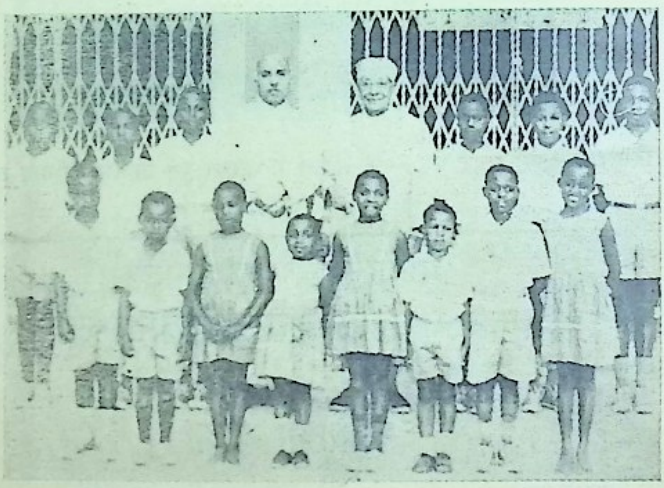

दयानन्द होम में अफ्रीका के मूल निवासियों के बालक भी 'वेद' ज्योति ग्रहण कर रहे हैं। महात्मा जी इन से मिलकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अफ्रीका में एक बच्चे के साथ स्वामी जी महाराज अपने पवित्र हृदय से स्नेह गंगा बहाते हुए

आर्यसमाज दारेसलाम के वार्षिकोत्सव पर विद्यालय के स्टाफ के साथ एक ओर विद्यालय की प्रिंसीपल और दूसरी ओर प्रो० दिलीप वेदालंकार खड़े हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

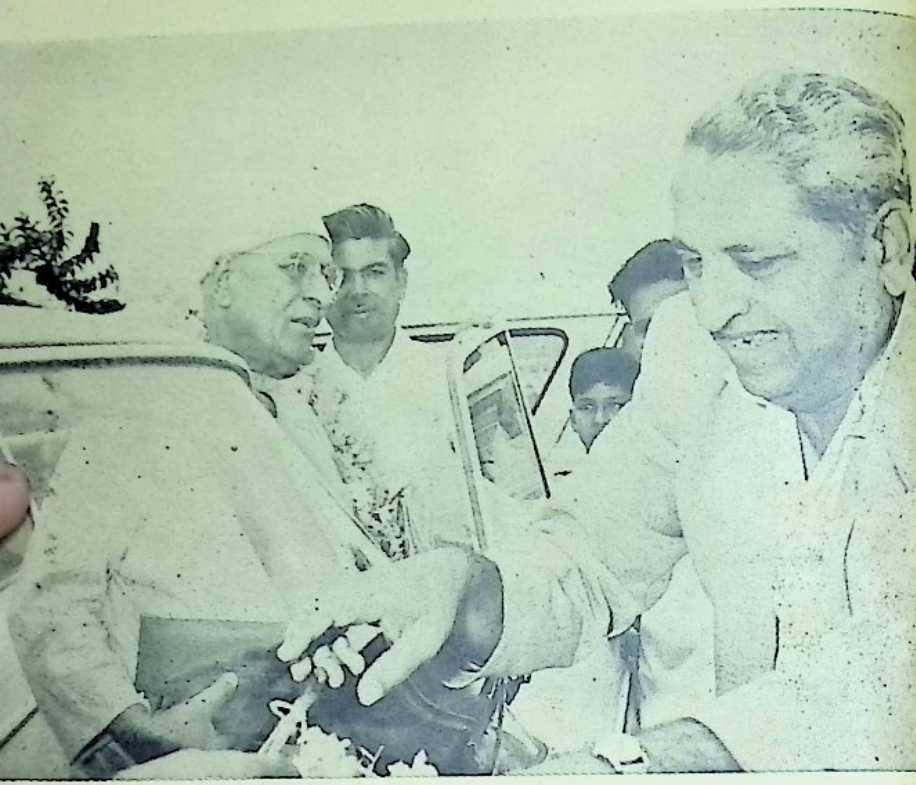

कोशी हवाई हड्डे पर महात्माजी का भव्य स्वागत

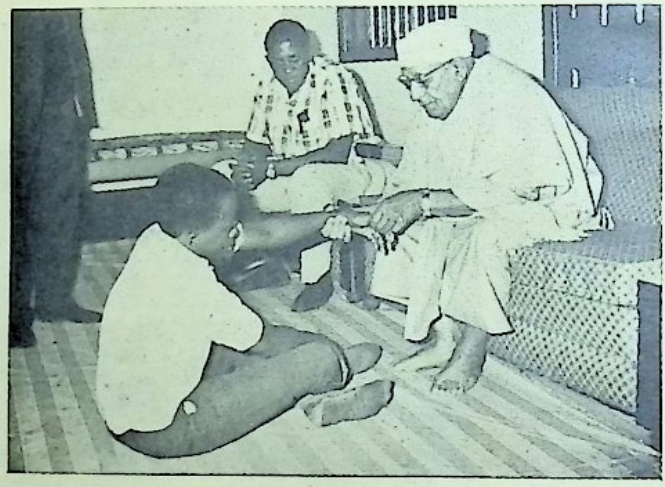

अरूशा में श्री ढाकरे के मकान पर एक अफ्रीकन अधिकारी के साथ
चिकित्सा सेवा में लगे हुए स्वामी जी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

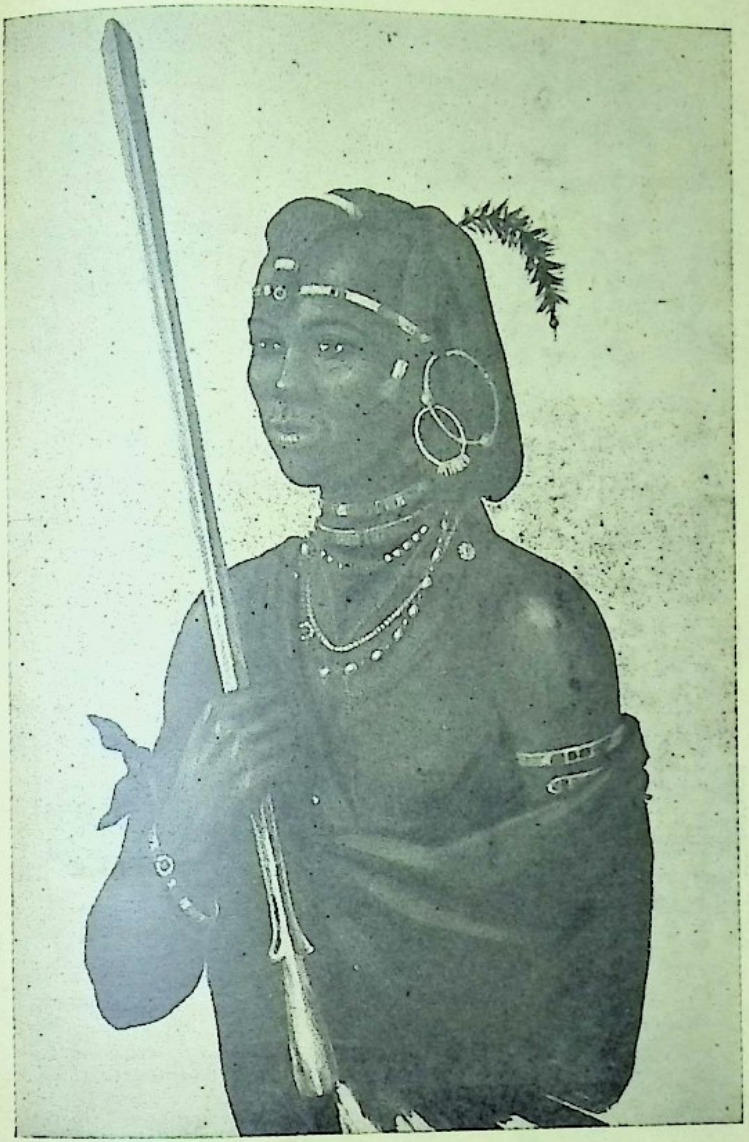

तानजानिया की मसाई जाति का एक सदस्य, जिसे प्रथम बार महात्मा जी ने वेदों का संदेश सुनाकर प्रसन्न किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अरूशा हवाई अड्डे पर श्री गुप्ता पुलिस कप्तान
श्री शाह प्रधान हिन्दू यूनियन के साथ

हवाई अड्डे पर एकत्र भारी भीड़ ने स्वामी जी का भव्य
स्वागत किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज दारेसलाम के डी० ए० वी० गर्ल्स प्राइमरी स्कूल की अफ्रीकन छात्राएं : महात्मा जी ने इन्हें वैदिक धर्म की महत्ता से परिचित कराया

विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए विदेशी भाषाओं में साहित्य की भारी आवश्यकता है।

"जन-ज्ञान-प्रकाशन"

विदेशों में प्रचार के लिए कृतसंकल्प है

अधिक से अधिक सहयोग दें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

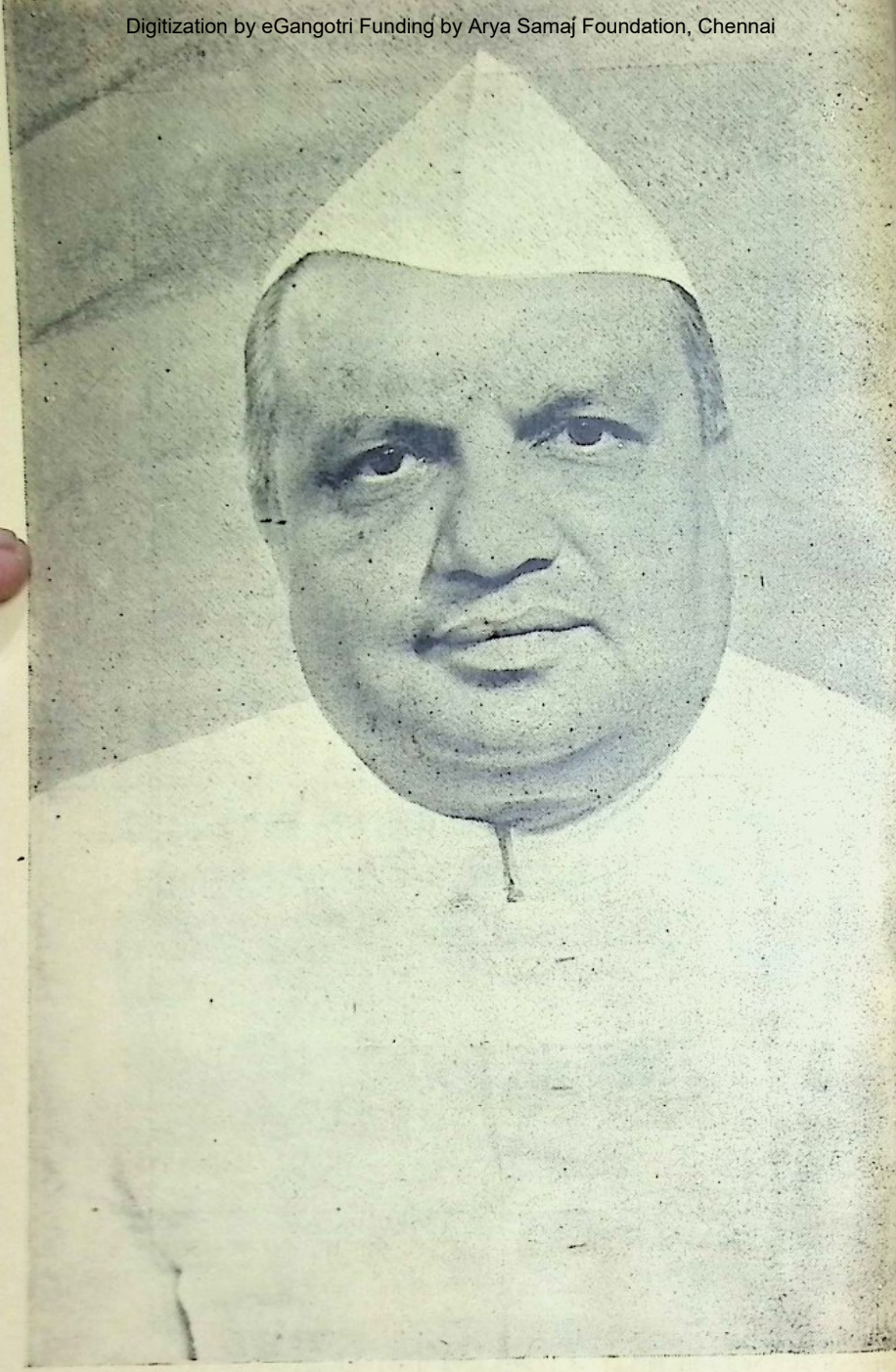

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास विदेशों में
वेद-प्रचार के लिए कृतसंकल्प हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशों में "जन-ज्ञान" की धूम

परमादरणीय श्री भारतेन्द्रनाथ जी, सादर सप्रेम नमस्ते।

दारेसलाम समाज पर आपका भेजा हुआ 'जन-ज्ञान' का १५ दिसम्बर का (वर्ष १ : अंक ५) मिला। देखकर व पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। आपके मार्ग-दर्शन में संचालित अत्यन्त लोकप्रिय एवं लब्ध प्रतिष्ठ उच्चस्तरीय साप्ताहिक 'आर्योदय' के सहसा बंद होने से जो निराशा हुई थी वह 'जन-ज्ञान' को देखकर दूर हो गई। सचमुच यदि पत्रकारिता को समझने वाले आप जैसे सुयोग्य संपादक एवं विद्वान् आर्य पत्रों को मिल जाएं तो हमारी शुष्क पत्र-पत्रिकाएं लोकप्रिय एवं आकर्षक बन सकती हैं। आप एक सिद्धहस्त एवं मँजे हुए पत्रकार हैं। यही कारण है कि आप द्वारा संपादित पत्र की भाषा, शैली, सामग्री का संकलन एवं चयन सुरुचिपूर्ण तथा बाह्य आकार-प्रकार भी आकर्षक होता है।

सचमुच "क्रियासिद्धः सत्वे भवति महत्ता नोयकरणे" को अपने चरितार्थ कर दिया। काश कि आपकी योग्यता से, तड़प से आर्यसमाज लाभ ले सके! आज वैदिक-विचार धारा के प्रचार की विदेशों में भी बड़ी भारी आवश्यकता है। 'जन-ज्ञान' दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करता जाए यही मंगल कामना। मेरी ओर से ५१) रु० की दान-राशि स्वीकार करें।

दारेसलाम-- **--दलीप वेदालंकार**

●

श्रद्धेय शक्तिमयी पूज्य बहिन जी, सादर नमस्ते।

अभी-अभी 'जन-ज्ञान' (नवम्बर) मिला। हृदय हुलस गया, आन्दोलित अन्तर आनन्दातिरेक से कुछ क्षणों के लिए स्थित प्रज्ञ बना बैठा और आशा-ज्योति प्रकाश-पुंज की शाश्वत प्रभा से परिपूर्ण हो चली।

'वेद कालीन विमान शास्त्र' 'आदि सर्ग में प्राणी का उद्भव'—दोनों लेख अपने-अपने ढंग के हैं। दोनों अधिकारी विद्वान् धन्यवादार्ह हैं। प्रयत्न ऐसा भी हो सके तो अधिक अच्छा रहे कि शतपथ ब्राह्मण आदि अनुपलब्ध ब्राह्मणों, आरण्यकों, निरुक्त आदि का अल्पमोली आकार में प्रकाशन हो। जब तक यह न हो, तब तक 'जन-ज्ञान' ही स्वतंत्र स्तंभ के माध्यम से हम अपरिचित ज्ञान-आकरों का परिचय देने का उचित प्रयत्न करे।

आपका अनुज
भैरवदत्त शुक्ल
लगुचा (खीरी) (उ० प्र०)

●

पाकिस्तान से आया एक पत्र

श्रीमान मान्यवर, सम्पादक महोदय! सादर प्रणाम,

निवेदन है कि आपका भेजा हुआ विशेष "अध्यात्मक अंक" मिला, जिसके लिए मैं आपका अत्यंत आभारी हूँ। अंक बहुत मूल्यवान है और लेखक महोदय ने बहुत परिश्रम किया है। आशा है आप लोग मेरे ऊपर ऐसी कृपा करते रहेंगे।

घोटकी (सिन्ध) —आपका **दयानन्द**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा आनन्द स्वामी जी से "जन-ज्ञान" प्रतिनिधि की भेंट

पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार द्वारा

आर्य समाज अब क्या करे ?

उलझी समस्याओं पर आर्य संन्यासी का सुलझा मार्ग दर्शन

★

आर्य जगत् के सर्वमान्य नेता और अखिल भारतीय आर्य महा-सम्मेलन हैदराबाद, के मनोनीत अध्यक्ष परिव्राट महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती की सेवा में, पूर्व निर्धारित समय के अनुसार, जब हम ठीक ३ बजे अपराह्न उनके आतिथेय के घर पहुँचे तो स्वामी जी महाराज ने अपनी स्वाभाविक प्रसन्न मुद्रा के साथ हमारा स्वागत किया। स्वामीजी से सर्वथा अपरिचित उसी कमरे में खेलती लगभग दो वर्ष की चंचल बालिका को महात्मा जी ने अपने नैसर्गिक बाल सुलभ हास्य-विनोद से ऐसा मुग्ध किया कि वह अनायास ही उनकी गोदी में खेलने लगी। वयस्कों के हृदय की स्वच्छता और निश्छलता को बच्चे कुछ ही क्षणों में भाँप लेते हैं क्योंकि वे स्वयं निष्कपटता व सरलता की मूर्ति होते हैं। हमारी गम्भीर मुलाकात में इस शिशु की सहज लीलाओं ने सर्वथा अनौपचारिकता का वातावरण पैदा कर दिया था।

यद्यपि स्वामी जी महाराज आयु के आठ दशकों को पार कर नौवें में से गुजर रहे हैं पर आप की देह-यष्टिका अभी तक सुगठित, स्वस्थ और चुस्त होने के साथ खूब क्रियाशील तथा मुखमंडल ओज: पूर्ण है। लगभग एक घंटे के सान्निध्य में हमने अनुभव किया कि हम एक उच्च स्तर के आध्यात्मिक व्यक्ति के चरणों में बैठे हैं। उनकी वाणी के पीछे, निश्चय ही, जीवन की दीर्घकालीन साधना, हृदय की प्रबल अनुभूति और आर्य समाज के प्रति अभिन्न आत्मीयता और साथ ही, दर्दभरी आहें थीं। उनके ये शब्द कि "आर्य समाज को आज क्या हो गया है," कितने मर्मान्तक और अन्तस्तल में गहरी छिपी पीड़ा के द्योतक थे।

पहला प्रश्न आर्य महासम्मेलन

हमारा पहला प्रश्न था—"आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष बनकर क्या आप आर्य समाज की वर्तमान गतिविधि को नया मोड़ दे सके हैं ?

उत्तर—"ऐसे सम्मेलनों से, सामान्यतः, कोई लाभ नहीं होता। अच्छा होता, अगर १५-२० आर्य नेता मिलकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी से प्रश्न पूछते हुए "जन ज्ञान" के विशेष प्रतिनिधि श्री पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार। पास में जन-ज्ञान की संपादक श्रीमती राकेश रानी बैठी हैं—

कोई कार्यक्रम बना लेते और उसे कार्यान्वित किया जाता।"

इस सम्बन्ध में महात्मा जी ने महर्षि दयानन्द के निम्न वाक्य पढ़कर सुनाये जो प्रथम सत्यार्थप्रकाश के पृ० ३९५ पर अंकित हैं और "वेदवाणी" के नवम्बर ६८ के "सत्यार्थप्रकाश-परिशिष्टांक" में प्रकाशित हुए हैं—

"वार्षिक उत्सवादिकों से मेला करना इसमें हमको अत्यन्त श्रेय गुण मालूम नहीं देता। क्योंकि इसमें मनुष्य की बुद्धि बहिर्मुख हो जाती है और धन भी अत्यन्त खर्च होता है।"

स्वामी जी ने स्वयं ही कहा—"परन्तु सर्वसाधारण की दृष्टि से इस प्रकार के समारोह लाभदायक होते हैं। इनसे आर्य समाज की संगठन शक्ति का परिचय मिलता है और उसका प्रदर्शन भी होता है।"

आर्य महासम्मेलन में किस प्रकार के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बननी चाहिए थी इस सम्बन्ध में महात्मा जी ने कहा—

"मेरे विचार में स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना सारे संसार का उपकार और वेद का प्रचार करने के लिए की थी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन इत्यादि भाषाओं के विद्वान् प्रचारक तैयार करने होंगे।

दूसरी बात—हिन्दी में तो वैदिक साहित्य तैयार करना ही है, पर, साथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही, विदेशी भाषाओं में भी साहित्य तैयार किया जाए।

तीसरी बात—वैदिक विचारों का प्रचार करने के लिए आधुनिक वैज्ञानिक प्रसार—माध्यमों से लाभ उठाना चाहिए, जैसे—वैदिक विचारधारा के पोषक चल-चित्रों का निर्माण, वृत्त चित्रों का प्रदर्शन इत्यादि।

दूसरा प्रश्न—फूट का इलाज

हमारा दूसरा प्रश्न था—"आर्य समाज में इस समय जो पारस्परिक फूट और मुकदमेबाजी है, उसके उन्मूलन के लिए आप क्या रास्ता बताते हैं ?

इस प्रश्न को सुनते ही स्वामी जी महाराज खिन्न चित्त हो गये और ठंडा श्वास लेते हुए बोले—

"जिस संस्था की हम लोग आजन्म सेवा करते रहे, उसे अपने ही जीवन में इस प्रकार उजड़ते देख, अनायास ही, नेत्रों से अश्रुधारा बह निकलती है। यह रोग इतना बढ़ गया है कि अब इसके लिए एक बहुत बड़ा अस्पताल बनाने की दरकार है। सबसे पहले यह देखना होगा कि ये झगड़े पैदा क्यों होते हैं ? मेरा दृढ़ विश्वास है कि इसका मूल कारण आर्य समाज में अध्यात्मवाद, श्रद्धा और भक्ति का इस समय सर्वथा अभाव है। स्वार्थ, पद लोलुपता और अहंकार की मात्रा बढ़ गयी है। रोग के इन कारणों का व्यक्तिगत तथा सामूहिक स्तर पर अविलम्ब निराकरण करना होगा।

तीसरा प्रश्न—परिवर्तन की दिशा

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की दृष्टि से आर्य समाज को अब क्या करना चाहिए और क्या परिवर्तन करने चाहिएँ ?

उत्तर—आर्य समाज को कूपमंडूक न बनकर विशाल और उदार दृष्टि अपनाना होगा। स्वाध्यायशील युवकों और ६० वर्ष से अधिक आयु के विद्वानों को विदेशी भाषा पढ़ाकर भारत से बाहर के देशों में प्रचारार्थ फैला देना चाहिए। जिस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस का नाम अमेरिका आदि देशों में केन्द्र स्थापित कर अमर कर दिया है, दयानन्द के शिष्यों को भी अब यही मार्ग अपनाना होगा। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"— इस वैदिक नारे को सफल करने का यही उपाय है।

दूसरा उपाय—बड़े पैमाने पर उपदेशक विद्यालय खोले जाने चाहिएँ। योग्य और उत्साही युवकों को इधर आकृष्ट करने के लिए उपदेशकों का वेतन स्तर ऊँचा हो और उनके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार किया जाए। उन्हें आर्थिक और पारिवारिक चिन्ताओं से सर्वथा मुक्त करने की व्यवस्था की जाए।

तीसरा उपाय—बड़ी आवश्यक चीज आर्य समाज की वेदी की पवित्रता की रक्षा है। इस समय यह वेदी चूं चूं का मुरब्बा बनी हुई है। राजनीतिक नेताओं व्याख्याताओं को इस वेदी पर खड़ा कर के और एक-दूसरे राजनीतिक दल के अनुकूल व प्रतिकूल भाषणों का उन्हें अबाध अवसर देकर आज हमने इस वेदी के गौरव को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। यह कड़ा नियम होना चाहिए कि आर्य समाज की वेदी से केवल वेद विषयक और आध्यात्मिक प्रवचन ही होंगे।

चौथा प्रश्न—विदेश यात्रा के अनुभव

हमारा चौथा और अन्तिम प्रश्न था—"आर्य समाज की दृष्टि से आपकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेश यात्राओं के अनुभव क्या हैं ?"

स्वामी जी महाराज ने इस प्रश्न को अत्यन्त उपयोगी बताते हुए कहा—इस समय तक मैं दक्षिण-पूर्व एशिया, यूरोप और पूर्वी अफ्रीका के समस्त देशों की यात्रा कर चुका हूँ। इन देशों की यात्रा मैंने किसी मनोरंजन व सैर-सपाटे के लिए नहीं, किन्तु एकमात्र प्रचार की दृष्टि से ही की है।

मेरा अनुभव है कि यूरोप के लोग तो धन कमा कर तंग आ चुके हैं। माया से ऊब गए हैं। बाइबिल उन्हें अपील नहीं करती क्योंकि वह विज्ञान-विरुद्ध है। हाँ, अब योग के प्रति उनकी रुचि बढ़ रही है। पर, इस योग की आड़ में भी धोखाधड़ी चल पड़ी है। योग के नाम पर धन कमाने वाले तो इन विदेशों में कई पहुँच रहे हैं पर इसके वास्तविक रूप की ओर अग्रसर करने वाले बहुत कम लोग वहाँ गए हैं। जब मैंने उन्हें बताया कि योग का विशुद्ध वर्णन केवल वेद में है, किसी मजहबी व साम्प्रदायिक पुस्तक में नहीं है और मैंने योग-सम्बन्धी वेद-मंत्र उन्हें सुनाए तो उन्होंने तत्काल पूछा कि "क्या वेद अंग्रेजी व जर्मन भाषा में मिल सकते हैं ?" मेरे पास इसका एकमात्र उत्तर था नहीं।

पूर्वी अफ्रीका के गोभक्त मसाई

पूर्वी अफ्रीका के तानजनिया देश की एक मसाई जाति का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने बताया कि "यह बड़ी वीर, युद्धप्रिय और साथ ही गोभक्त जाति है।" इस सम्बन्ध में आपने आपबीती एक दिलचस्प घटना सुनायी।

आपने कहा "जब मैं इस देश में आरूशा नगर से मनियार झील की ओर जा रहा था, तो मार्ग में लगभग २५० साधुओं का जमघट देखा। ये लोग भगवे रंग के कपड़े पहने हुए थे। इन साधुओं को देख मुझे, स्वभावतः बड़ा आश्चर्य हुआ। मेरे साथ एक दोभाषिये सज्जन थे। उनके द्वारा बातचीत की। पता चला कि ये लोग अत्यन्त गौ-भक्त हैं। गौ को बहिन और बैल को भाई मानते हैं—और जैसे भाई का काम बहिन की रक्षा करना है। वे गौरक्षा को अत्यन्त पुनीत कर्त्तव्य मानते हैं। मुझे गेरुए कपड़ों में देख उन्होंने आश्चर्य के साथ मेरे बारे में पूछा। मैंने कहा, "मैं भारतीय मसाई हूँ।" मैंने उन्हें वेद मंत्रों द्वारा गौ-रक्षा के मंत्र सुनाए। वे बड़े प्रसन्न हुए। बोले—क्या वेद "सुहेली" (उनकी अपनी भाषा) में मिलते हैं ?" मेरे पास इसका भला क्या उत्तर हो सकता था ? मैंने पूछा कि "क्या वेद का नाम सुना है ?" उत्तर—"नहीं।" "क्या स्वामी दयानन्द का नाम सुना है ?" उत्तर—"नहीं।" "क्या गाँधी का नाम सुना है ?" तो वे बोले, "हाँ, सुना है।" मैंने कहा, "गाँधी जी ने जिससे प्रेरणा और प्रकाश प्राप्त किया था, वह दयानन्द ही था। स्वामी दयानन्द ने वेदों से ही प्रेरणा लेकर मानव-मात्र के लिए सुख का मार्ग बताया है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि वैज्ञानिक ढंग से यदि विदेशों में वेद धर्म का प्रचार किया जाए, तो बहुत सफलता मिल सकती है।

पाँचवाँ प्रश्न—राष्ट्रीय समस्याएँ

देश की वर्तमान समस्याओं के सम्बन्ध में पूछे जाने पर स्वामी जी महाराज ने कहा—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद इन २० वर्षों में भारत का भयंकर नैतिक अधः पतन हो गया है। इसका सुधार आर्य समाज के द्वारा ही हो सकता है। पर कौन-सा आर्य समाज ? आजकल का नहीं, किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी और महात्मा हंसराज जी का आर्य समाज। रामलीला मैदान में प्रति वर्ष 'ऋषि निर्वाण दिवस" मनाया जाता है। एक बार सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इसमें भाषण देते हुए बिल्कुल ठीक कहा था कि सरकार तो भवन-निर्माण करेगी पर चरित्र-निर्माण का काम आर्य समाज अपने हाथ में ले।" शोक है आर्य समाज ने यह काम अपने हाथ में आज तक नहीं लिया है। कुछ स्वार्थी व्यक्तियों के कारण आर्य समाज का स्तर निरन्तर गिर रहा है। इस समय सबसे बड़ी आवश्यकता देश के चरित्र-निर्माण की है।

स्वामीजी महाराज ने बल-पूर्वक कहा कि चरित्र-निर्माण बिना आध्यात्मिक बल के नहीं हो सकता। संसद और विधान सभाओं के सदस्य यह काम नहीं कर सकते। यह तो निःस्वार्थ, चरित्रवान् प्रभु भक्त और आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा ही हो सकता है।

राष्ट्रीय समस्या का दूसरा हल इस तथ्य को समझना है कि भारत कृषि प्रधान देश है। बड़ी-बड़ी औद्योगिक योजनाओं और कारखानों की अपेक्षा कृषि पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। युवकों को इधर प्रेरित किया जाए। आपने बताया कि तनजानियां के राष्ट्रपति श्री नेरेरे ने यही मार्ग अपनाया है। वहाँ स्कूल कालेजों में आधा समय पढ़ाई होती है और आधा समय प्रत्येक छात्र के लिए खेती-बाड़ी करना अनिवार्य है। यहाँ भी युवकों को कालेजों और विश्वविद्यालयों की लम्बी मोटी डिग्रियों के मोड़ से हटा कर "भूमिधर" बनाने की आवश्यकता है।

स्वामीजी के प्रति कृतज्ञ हो धन्यवाद प्रकट करते हुए हम उनसे विदा हुए।

★

ईश्वर सफल करे !

परमादरणीय श्राद्धेय बन्धुवर श्री भारतेन्द्र जी, सादर सप्रेम नमस्ते !

आपके संरक्षण में "**जन-ज्ञान**" का महर्षि दयानन्द श्रद्धांजलि अंक देख कर मन में बहुत भारी प्रसन्नता हुई—इसे सम्पूर्ण रूप से पूर्ण रोचकता व तन्मयता से पढ़ा फिर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि महर्षि देव दयानन्द की जगाई ज्योति से संसार के समस्त विद्वान लोग अवश्य प्रभावित हुए हैं और वह ज्योति काम कर रही है उसी के आलोक की छाया पाकर उस (महर्षि) के अनन्य भक्त श्री पण्डित भारतेन्द्र जैसे अनेकों रत्न अब भी हमारे समाज में विद्यमान हैं जो कि धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक आदि विविध क्षेत्रों में अत्युत्तमता से काम कर रहे हैं। अनेक विघ्न बाधाओं के आने पर भी यह ज्योति बुझेगी नहीं अपितु एक दिन विश्व को वेदों के अनन्त ज्ञान व आनन्द की ओर ले ही जायेगी—ईश्वर आपको अपने ध्येय में सफल करे।

—ध्यानसिंह वैद्य

सहारनपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप हैं - श्री राणा रणवीर सिंह

आप आर्यसमाज दीवान हाल के अन्तर्गत आर्य वीर दल के शिक्षक के स्थान पर कार्य कर रहे हैं। आप युवकों में वैदिक विचारधारा का प्रसार कर रहे हैं। आपकी संरक्षता में इस समय यमुना बाजार, मोर सराय, बड़ी मोर सराय, इन्दारा कुआ, तुर्कमान गेट, विक्रम नगर, कोटला फिरोज शाह, देवनगर, रघुवर पुरा, गाँधी नगर, आदि स्थानों पर आर्य वीर दल का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। आपके कार्य से खुश होकर आर्य नेता ला० रामगोपाल शाल वाले संसद् सदस्य व आर्य समाज के मन्त्री श्री पुरुषोतमदत्त जी आर्यसमाज दीवान हाल के सभासद व सदस्य पूर्ण सहयोग व सहानुभूति कर रहे हैं। आपके प्यार से व मेहनत से किये हुए कार्य से दिल्ली के युवक अति प्रभावित हुए हैं। आप भी युवक वर्ग से अति स्नेह रखते हैं। आपके सम्पर्क में मैट्रिक, बी० ए० और एम० ए० तक के युवक आए है। आर्य समाज को आपसे बहुत आशाएँ हैं। प्रभु आपको और भी ज्यादा कार्य करने की शक्ति दें।

—सम्पादक

नेत्र रोगों की अब कोई समस्या नहीं रही

यह है आयुर्वैदिक औषधियों का चमत्कार !
यदि आपके दांतों में किसी भी प्रकार का रोग है !!
यदि आपकी स्मरण-शक्ति नष्ट हो गई है !!!
यदि आपके बाल समय से पूर्व ही सफेद हो गये हैं !!!!

तो

तुरन्त ही लिखें अथवा मिलें इन दुष्ट रोगों को समूल नष्ट करके दिव्य-ज्योति तथा नव-जीवन केवल छः मास में औषधि के प्रयोग से प्राप्त करें।

रोगों का विवरण भेज कर घर पर ही चिकित्सा करा सकते हैं उत्तर के लिए २० पैसे का टिकट आना आवश्यक है।

मिलने का समय :—प्रातः ८ से १२ बजे तक सायं ४ से ७ बजे तक

वैद्य देवेन्द्र आर्य आर० एम० पी०

देवेन्द्र रसायनशाला, दयानन्द नगर, गजियाबाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेहरबानी

आपने भाषण सुनाया, मेहरबानी आपकी।
दस बरस में मुँह दिखाया, मेहरबानी आपकी॥
आपने दिल को न बदला, दलबदल करते रहे।
पार्टी से, वोटरों से, आप छल करते रहे॥
क्योंकि थैली से मुहब्बत है पुरानी आपकी।
भाषणों की रेत में है, नांव 'प्लानिंग' की चलाई॥
बेतुके कुछ आँकड़ों की दी हमेशा ही दुहाई।
किन्तु भ्रष्टाचार ने कह दी कहानी आपकी॥
आपसे वोटों के बदले हमको लाचारी मिली।
'टैक्स' की तोहमत मिली, मँहगाई, बेकारी मिली॥
हाय! कितनी 'सोशलिस्टिक' है निशानी आपकी।
आपने बनके 'मिनिस्टर' कोठियां बनवाई हैं॥
नौकरी अपने 'भतीजे, भाई' को दिलवाई हैं।
याद पिछलग्गू करेंगे कद्रदानी आपकी॥
कहते हैं 'सेवक' स्वयं को, और खुद मोटर में चलते।
'स्वामी' नंगे पांव जिनके धूप में हैं पैर जलते॥
बात है आदर्श की सब मुँह जबानी आपकी।
काट अपने सींग, फिर बछड़ों में शामिल हो गए॥
'यंग ब्लड' की दे दुहाई खुद मुकाबिल हो गए।
जानें कब छोड़ेगी कुर्सी, नौजवानी आपकी॥

आपकी

—विजय वीर त्यागी

हार्दिक शुभ कामना

जनज्ञान का अध्यात्म विशेषांक पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। एतदर्थ धन्यवाद! मैं इसके पुराने अंकों और इस अंक को देख कर यह कहना चाहता हूँ कि वास्तव में यह अपने नाम को सार्थक करता हुआ मनुष्यों में उच्च कोटि के ज्ञान का प्रसार कर रहा है। सारे विश्व का ज्ञान पुस्तकों में भरा हुआ है तथा उसमें से छाँट-छाँट कर उत्कृष्ट साहित्य प्रकाशित करना ही सच्ची साहित्य सेवा है जिसे जनज्ञान अथक परिश्रम से कर रहा है। इसके योग्य और उत्साही संरक्षक एवं निर्देशक श्री भारतेन्द्र नाथ जी साहित्यालंकार का भी मैं अभिनन्दन सहित आभार प्रदर्शन करता हूँ जो अब इसके माध्यम से आर्य जगत का भारी उपकार कर रहे हैं। जनज्ञान की प्रगति की शुभकामना करते हुए हर्ष है।

—नथमल पीतलिया
व्याख्याता एवं वाणिज्य विभागाध्यक्ष
एडवोकेट हाईकोर्ट, रतलाम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

● श्री विद्याभास्कर शास्त्री, (देहरादून)

क्या हम महर्षि के मार्ग पर चलेंगे या.....

महर्षि का जीवन

(१) प्रारम्भ से क्रान्तिकारी जीवन रहा है।
(२) बलिदान की भावनाओं से ओत-प्रोत है।
(३) आस्तिकता से भरा हुआ है।
(४) सत्य के अन्वेषण के लिए सतत प्रयत्न करने वाला जीवन है।
(५) पदलोलुपता से दूर, बहुत दूर है।
(६) सरलता, स्वाभिमानता, परोपकार प्रियता, स्वदेश भक्ति, भारतीय-संस्कृति, सभ्यता, वेश-भूषा, भाषा की वास्तविकता पावन प्रतिभा का दर्शन करना चाहते हो तो महर्षि के आद्योपान्त जीवन का दर्शन करो।

महर्षि ने जड़प्रतिमोपासना को अवैदिक बतलाया, महर्षि ने कहा ईश्वर निराकार है, सर्वशक्तिमान् है। सर्वव्यापक है। "न तस्य प्रतिमा अस्ति" उसकी मूर्ति नहीं बन सकती। निराकार मान कर उसके गुणों की उपासना करो, उसके गुणों को धारण करो। यही उसकी सच्ची उपासना होगी। नित्यप्रति दोनों समय सन्ध्या करो, यज्ञ करो। जड़ मूर्ति पूजा छोड़ो। हमने जड़ मूर्ति पूजा छोड़ दी, बहुत अच्छा किया। परन्तु हम महर्षि के आदेशानुसार नियमपूर्वक संध्या करते हैं क्या? अपने आप से ही प्रश्न करके उत्तर ले लीजिये। हमने छोड़ने वाली बात छोड़ दी, परन्तु उसके स्थान पर ग्रहण करने वाली बात को जीवन में उतारा क्या? क्या इसका उत्तर वर्तमान आर्य समाज "हाँ" में दे सकता है?

महर्षि ने कहा—अपने जीवन के उत्थान का क्रम बनाओ, क्रम से चलोगे लाभ होगा अन्यथा हानि। महर्षि ने कहा पहले शारीरिक आत्मिक फिर सामाजिक उन्नति की ओर बढ़ो। विकास का क्रम यूं होना चाहिये। क्योंकि हमारा उद्देश्य, संसार का उपकार करना है और संसार का भला करने में हम तभी समर्थ हो सकते हैं। जबकि शारीरिक और आत्मिक उन्नति करके पुनः सामाजिक उन्नति की ओर बढ़ें। क्या हमने ठीक ऐसा ही किया? नहीं, वर्तमान आर्य समाज ने ठीक इसके विपरीत किया। हम एकदम सामाजिक उन्नति में लग गये। लम्बे-लम्बे जोशीले भाषणों से आकाश गुंजा दिया। सामाजिक उन्नति करो? देश का कल्याण करो, धर्म का आचारण करो, अपनी सन्तान को सुधारो पारिवारिक विकास करो, उपदेशात्मक रूप में यह बातें बहुत अच्छी हैं, बहुत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छी लगीं। परन्तु इनका क्रियात्मक रूप देख लीजिए, अन्तर्मुखी होकर स्वयं विचारिये? हम शारीरिक आत्मिक और पारिवारिक उन्नति की ओर कुछ ध्यान दे रहे हैं क्या? यदि कहीं-कहीं महर्षि के प्रबल अनुयायी हैं भी तो उनके परिवार को देख लीजिये। वह व्यक्ति किधर जा रहा है और उसका परिवार किधर जा रहा है?

पहले शारीरिक शक्ति बढ़ानी होगी इसके लिए उचित सात्विक खान-पान, सुन्दर वातावरण आवश्यकतानुसार व्यायाम इत्यादि। मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए—ईश्वरोपासना, आभ्यान्तरिक चिन्तन मनन, स्वाध्याय आवश्यक है। जब शरीर मन और आत्मा का विकास हो फिर समाज के विकास के लिए आगे बढ़ो, सफलता तभी मिलेगी। महर्षि के जीवन में कई स्थान पर आता है। समाज की निःस्वार्थ सेवा करो, जो करो अपना कर्तव्य समझ कर करो। जैसा मन में हो वैसी वाणी में और वैसा ही आचरण में हो तीनों स्थान पर एकरूपता हो ऐसा नहीं कि मन में कुछ और, वाणी में कुछ और, और कर्म में कुछ और हो। महर्षि ने कहा कि समाज की सेवा करो परन्तु पद की इच्छा मत रक्खो?

मैं पूछता हूँ कि क्या वर्तमान आर्य समाज महर्षि के इस आदेश का पालन कर रहा है क्या? वर्तमान आर्य समाज महर्षि के इस आचरण का अनुकरण कर रहा है क्या? मैं समझता हूँ पाठक भी इसका यही उत्तर देंगे, नहीं? क्योंकि आज यदि हम महर्षि की इन बातों पर आचरण करते होते तो आर्य समाजों में, प्रान्तीय सभाओं में और अन्यत्र उच्च संस्थाओं में भी इस प्रकार के झगड़े न होते? पद के लिए संघर्ष न होता? कुर्सियों के लिए होड़ नहीं लगती। दलबन्दी समाप्त हो जाती, जो सच्ची भावना से समाज की सेवा करता वह आगे होता, वह हमारा नेता होता, वह हमारा मार्ग दर्शक होता।

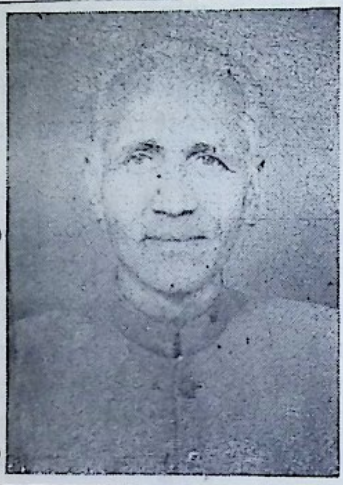

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् लेखक और कवि-विचारक श्री० पं० विद्याभास्कर जी आर्य समाज के उन रत्नों में से हैं जिन पर जितना गर्व किया जाए थोड़ा है। उनके हृदय की वाणी क्या हम सुनेंगे। —सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु ऐसा हो नहीं रहा है। यहाँ तो पार्टी है, दलबन्दी है, प्रधान और मन्त्री बनने का संघर्ष है। चुनाव से पूर्व ही तैयारियाँ होने लगती हैं। तरह-तरह के हथकण्डे प्रयोग किये जाने लगते हैं व्यक्त और अव्यक्त रूप से अपना-अपना प्रोपेगण्डा प्रारम्भ कर दिया जाता है। इस दूषित वातावरण का परिणाम यह हो रहा है जो विद्वान् हैं, जो सुयोग्य हैं, सुलझे हुए अनुभवी व्यक्ति हैं, जिन्होंने समाज के लिए बहुत कुछ किया है बलिदान किया, हैं अब भी कुछ करना चाहते हैं। उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं, उनकी कोई कदर नहीं, वह तो अपने सीधेपन के कारण समाज में बुद्धू समझे जा रहे हैं। वह भी कुर्सियों के लिए दल बना सकते हैं वह भी समाज के इन दूषित तत्त्वों के समान सब कुछ कर सकते हैं परन्तु वैसा करना चाहते नहीं बस केवल इतना ही उनका अपराध है। इसी कारण उनकी सज्जनता से अनुचित लाभ उठा रहे हैं वह लोग जो आर्य नहीं, आर्य समाजी नहीं। उनके और उनके परिवार में नास्तिकता का साम्राज्य है। उनका आडम्बर और ढोंग से भरा हुआ जीवन आज के युग में दूषित मनोवृत्ति वाले राजनैतिक नेता के समान जनता की आँखों में धूल झोंक कर अपना उल्लू सीधा करने वाला है। वह लोग पद से ऐसे चिपटे हुए हैं जैसे जोंक। बस इन्हें एक बार प्रधान और मन्त्री तो बन जाने दो, फिर देखो इनकी करामात। छोड़ने का नाम नहीं लेते। इनकी धाक जम जाती है, फिर समाज सेवी सज्जन अपनी सज्जनता के कारण यह समझ कर कि छोड़ो क्या रक्खा है इन बातों से उनको कुर्सी पर बने रहने दो, अपने राम तो दयानन्द के सच्चे भक्त हैं सेवा करना हमारा धर्म है, कर रहे हैं, करते रहेंगे, निःस्वार्थ भाव से ? हमें पद-वद नहीं चाहिए इत्यादि-इत्यादि। पाठक स्वयं सोचे, इस विकट स्थिति में आर्य समाज का भविष्य किधर जा रहा है।

इससे अधिक पतन की बात और क्या हो सकती है कि प्रान्तीय सभाओं के एवं शिरोमणि सभा तक के झगड़े भी वर्तमान सरकार की अदालत की शरण लेने लगे हैं। कहाँ गई हमारी न्याय सभा ? कहाँ गई महर्षि की पावन विचार धारा ?

समय आ गया है। समय से पहले चेतना होगा—यदि आज आर्य जगत् के गम्भीर विचार शील विद्वान् जागरूक नहीं होंगे तो वह समय दूर नहीं जबकि आर्य संसार को किसी ऐसी भयंकर परिस्थिति का सामना करना होगा जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। सबके विचारार्थ—शुद्धभाव से पाठकों की सेवा में यह कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं। सोचिये, समझिये और महर्षि के प्रति सच्ची आस्था एवं श्रद्धा-भक्ति का परिचय तदनुकूल आचरण करके दीजिए। "स्वस्तिपन्थामनुचरेम"

आपस की फूट ने भारत गारत कर दिया था। और आज इस फूट पिशाचिनी ने आर्य समाज में डेरा डाला है। जागो ! दयानन्द के सच्चे अनुयायियो ! उठो ! और फूट का विषैला वृक्ष जड़ से जला दो।

फूट के रहते महर्षि का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता·····इसलिए फूट की होली जलाओ।

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पराजय

भारत के तपस्वियों की विलक्षणता सुनकर सिकन्दर ने दस साधुओं को पकड़वा बुलाया दसों तपस्वी नग्न थे। सिकन्दर ने एक की ओर मुख करके कहा—'इन नौ साधुओं से मैं एक-एक प्रश्न करूंगा। सबसे अच्छा उत्तर देने वाले को सर्व प्रथम और उसके बाद अच्छाई के क्रम से शेष सब को मार डाला जायगा। उत्तरों की श्रेष्ठता का क्रम तुम्हें बताना है।'

निर्णायक साधु अलग बैठ गया। शेष एक-एक कर सिकन्दर के समक्ष प्रस्तुत हुए।'

पहले साधु से सिकन्दर ने प्रश्न किया—"जीवित मनुष्यों की संख्या अधिक है या मृतकों की ?"

'जीवितों की' साधु ने उत्तर दिया कारण यह कि 'मृत्यु होने के बाद तो वे रहते ही नहीं।'

सिकन्दर ने दूसरे से पूछा—'समुद्र में अधिक जीव हैं या पृथ्वी पर ?' साधु का उत्तर था—'पृथ्वी पर, क्योंकि समुद्र पृथ्वी का ही एक भाग है।' सिकन्दर का प्रश्न तीसरे साधु से था—'जानवरों में सबसे बुद्धिमान् कौन है।' उत्तर मिला—'वह जो मनुष्य के लिए अब तक अज्ञात है।'

सिकन्दर ने चौथे साधु से पूछा—'तुम ने अपने राजा शम्भु को विद्रोह के के लिए क्यों प्रेरित किया ?'

'इसलिए कि जीना या मरना इज्जत के साथ चाहिए।' उत्तर मिला।

अब सिकन्दर ने पांचवें साधु से पूछा—'पहले दिन बना या रात ?'

'दिन रात से एक दिन पहले ?'

सिकन्दर ने खीझकर कहा—

'क्या मतलब ?'

साधु का निर्भीक उत्तर था, जैसा प्रश्न, वैसा उत्तर।'

सिकन्दर हतप्रभ हो रहा था। उसने छठे साधु से पूछा—'मनुष्य किस प्रकार दुनिया का प्यारा हो सकता है'—'शक्ति और प्रजा के स्नेह से।

उसने सातवें साधु से पूछा—'मनुष्य देवता कैसे बन सकता है ?'

साधु ने उत्तर दिया—'अमनुजकर्मा होकर।'

'जीवन और मृत्यु दोनों में अधिक बलवान् कौन है।'

साधु बोला—'जीवन'।

सिकन्दर ने नवें से पूछा—'कब तक जीवन इज्जत से जीना है ?'

जब तक मनुष्य यह न सोचने लग जाय कि अब जीने से अच्छा मर जाना है।

अब सिकन्दर ने निर्णायक साधु से निर्णय मांगा।

वह साधु बोला—उत्तर एक-से-एक बढ़कर है।' सिकन्दर किसी को न मार पाया। वह जीत कर भी हार गया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

● श्री विमल

खुदीराम और चाकी

अप्रैल सन् १९०८ की बात है। कोई नहीं जान पाया कि १६-१७ वर्ष के वे दोनों बंगाली लड़के किस अभिप्राय से कलकत्ते से मुजफ्फरपुर आए थे। दोनों स्टेशन के समीप वाली धर्मशाला में टिके थे।

रात्रि के बारह बज रहे थे। एक साथी कमरे में घुसा। दूसरा साथी पहले ही ९ बजे आ चुका था।

"कुछ काम बना ?"

"पता लग गया।" दूसरे ने उत्तर दिया।

"अरे सच ?" पहले ने आश्चर्य प्रकट किया।

"वह लाल रंग की फिटन पर चढ़कर सायंकाल एक क्लब जाता है।" पहले ने उत्तर दिया।

"तो बस जब घर लौटे तभी···?"

"हाँ क्लब के गेट पर ३-४ पेड़ खड़े हुए हैं। उनके पीछे खड़ा हुआ जा सकता है।"

'तो कल तय रहा।"

"हाँ, तय ही है। अंधेरा पक्ष भी है। समय साढ़े आठ···।" बाद में आए साथी ने जेब में से एक रूमाल निकाला, जिसमें भुना चिवड़ा और कुछ गुड़ बँधा था।

बस दोनों खाने लगे।

३० अप्रैल की संध्या थी। क्लब के बाहर का स्थान।

लाल रंग की एक फिटन सामने से गुजरी।

'धाँय ! धाँय !! धाँय !!!"

फिटन के लत्ते उड़ गए। उस पर बैठी हुई दो अंग्रेज स्त्रियां आहत होकर धरती की धूल चाटने लगीं।

पहरे पर नियुक्त तहसीलदार तथा फैजुद्दीन नामक सिपाहियों ने थाने में रिपोर्ट की।

\+ \+ \+

कलकत्ते की बात है। किंग्सफोर्ड नामक एक पुलिस मजिस्ट्रेट ने पुलिस से हाथपाई करने के अपराध में एक लड़के को बैतों की सजा दी और कुछ क्रांतिकारी युवकों को उत्तेजनापूर्ण लेख लिखने के अपराध में दंडित किया।

परिणामतः कलकत्ते की क्रांतिकारी शाखा की बैठक हुई, जिसमें सर्वसम्मति से किंग्सफोर्ड की हत्या का निर्णय किया गया। इस काम का उत्तरदायित्व खुदीराम बोस तथा प्रफुल्लकुमार चाकी नामक दो युवकों को सौंपा गया।

दोनों युवक निश्चित तिथि पर एक बम, ३ पिस्तौलें और ४० कारतूस लेकर रवाना हुए।

फिटन पर बम फेंकने के पश्चात् दोनों युवक भिन्न-भिन्न दिशाओं में भागे।

खुदीराम भागा चला जा रहा था। काफी दौड़ने के कारण थक गया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आखिरकार एक छोटी-सी गली में स्थित मोदी की एक दुकान पर कुछ खाने के लिए बैठा। मोदी पास ही किसी व्यक्ति मे बातचीत कर रहा था। इसलिए कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ी।

इसी समय दो व्यक्ति उसको घूर-घूर कर देखते हुए निकले।

अभी खुदीराम प्रतीक्षा ही कर रहा था कि वे दोनों अपरिचित व्यक्ति पुनः आते हुए दिखाई दिए उन्होंने खुदीराम का हाथ पकड़ते हुए कहा—"हम तुम्हें गिरफ्तार करते हैं।"

खुदीराम कमर में कसा रिवाल्वर भी न चला सका। उसे बन्दी बना लिया गया।

प्रफुल्ल चाकी जब समस्तीपुर स्टेशन पर आया तो गहुत बुरी तरह थक चुका था। भूख भी भयंकर रूप में सता रही थी। दो पैसे के आलू लेकर किसी प्रकार भूख बुझाई।

जैसे ही चाकी डिब्बे में जाकर बैठा, प्लेटफार्म पर टहलते हुए एक सूटेड बूटेड बंगाली सज्जन ने उसको तीखी निगाह से देखा कहीं सन्देह न हो जाय इसलिए चाकी ने उस ओर से निगाह हटा ली।

किन्तु थोड़ी ही देर में उक्त सज्जन चाकी के पास आ बैठे और लगे परिचय पूछने। किसी प्रकार चाकी ने टालने का साहस किया और आखिर में यह कहकर कि "दूसरे कंपार्टमेंट में माता जी बैठी हैं।" दूसरे कंपार्टमेंट में जा बैठा।

मुकामा स्टेशन आया और पुलिस ने चाकी का कम्पार्टमेंट जा घेरा। चाकी तब तक डिब्बे से उतर कर प्लेटफार्म पर आ खड़ा हुआ था।

"मैं आपको सन्देह में गिरफ्तार करता हूँ!" कहने वाला वही व्यक्ति था, जिसने उसके डिब्बे में चढ़कर परिचय पूछा था।

चाकी समझ गया कि अब बचने का कोई उपाय नहीं।

"धाँय! धाँय!?"

एक गोली दगी और खून का फव्वारा छोड़ता हुआ चाकी प्लेटफार्म पर गिर पड़ा।

क्रांतिकारियों के रहस्य जानने का इच्छुक स्व-इन्स्पैक्टर हाथ मलता ही रह गया।

जेल की दीवारों में मरने की अपेक्षा नरसिंह ने मत्यु का आलिंगन करना अधिक उपयुक्त समझा।

उधर तीन मास व्यतीत हो गए। आज १० अगस्त का दिन था। दूसरे दिन खुदीराम को फाँसी होने वाली थी।

श्री मानुक और श्री विनोद मजूमदार ने सरकार की ओर से पैरवी की तथा खुदीराम की ओर से केवल कालीदास बोस ने।

बेचारे काली बाबू खुदीराम को फाँसी के तख्ते से बचा न सके। सब प्रयास बेकार रहे।

आज न चाकी है न खुदीराम। किन्तु हम देखते हैं कि उनकी काली आँखों की चमक और गहराई उतनी ही ताजी बनी हुई है स्वतन्त्र भारत के वैभवपूर्ण दृश्य को देखने के लिए। किन्तु ·····।

आओ! भारत माँ की स्वतन्त्रता की रक्षा का हम हृदय से संकल्प लें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान के नियम

१—'जन-ज्ञान' मासिक पत्रिका है। इसका उद्देश्य (१) महर्षि दयानन्द के महान् लक्ष्य को पूर्ण करना (२) संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक 'वेद' का पावन संदेश पहुंचाना (३) और अज्ञान-पाखण्ड की समाप्ति के लिए प्रत्येक संभव पग उठाना है।

२—'जन-ज्ञान' में व्यक्तिगत राग द्वेष और पार्टी बाजी के लेख या सूचना किसी भी स्थिति में नहीं प्रकाशित किए जायेंगे।

३—वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध विज्ञापनों का प्रकाशन भी किसी भी स्थिति में नहीं होगा।

४—जन-ज्ञान का वार्षिक शुल्क ६), एक प्रति का ५० पैसे है। सदस्यों को विशेषांक बिना मूल्य दिए जायेंगे।

५—प्रत्येक मास की २-३ तारीख को जन-ज्ञान भेज दिया जाता है। यदि १० तक भी न मिले तो समझिए आपका 'जन-ज्ञान' कोई और पढ़ रहा है। १० तारीख तक जन ज्ञान न मिले तो सूचना प्राप्त होने पर "जन-ज्ञान" दुबारा बिना टिकट लगाए वैरंग भेजा जाएगा। २० तारीख के बाद किसी भी शिकायती पत्र पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा!

६—किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

प्रबन्धक **जन-ज्ञान-प्रकाशन** १५९७ हरध्यानसिंह रोड नई दिल्ली-५

एक आर्योपदेशक का पत्र

श्रीमती राकेश रानी जी तथा श्रीमान् भारतेन्द्र नाथ जी सम्पादकाचार्य को हमारा सादर सप्रेम नमस्ते स्वीकृत हो।

आपका भेजा हुआ ऋषि दयानन्द जीवन गाथा, अंक मिला धन्यवाद, ईश्वर आपको तथा देवता श्री भारतेन्द्र नाथ को चिरायु करें।

आपने जिस प्रकार 'आर्योदय' को चमका दिया था उसी प्रकार जनज्ञान उससे भी ज्यादा चमकाया है आपकी तारीफ जितनी भी की जाये थोड़ी है।

आप हम से दूर हैं वर्ना हम आपको ऐसे सुन्दर अंक के प्रकाशित करने के ऐवज में फूलों की माला अर्पित करते (मैं एक और ग्राहक बनाने की कोशिश कर रहा हूँ।)

आर्य संसार बड़ी प्रसन्नता से तथा बड़ी श्रद्धा भक्ति से आपकी ओर निहार रहा है।

आर्य समाज के पत्रों में सुन्दरता का अभाव था। वह आपने पूरा कर दिया। आपसे भविष्य में इसी प्रकार की सामग्री आर्य जनता को मिलेगी ऐसी आशा है।

(महाराष्ट्र) —**गंगा प्रसाद आर्य**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने नेत्रों को सदा स्वस्थ बनाये रखने के लिये प्रतिदिन नाग ज्योति प्रयोग करने की आदत डालिये।

नाग ज्योति आंखों को नीरोग बनाता है। इसके प्रतिदिन व्यवहार करने से आंखों की जलन, सुर्खी, सूजन, गुहांजनी, पानी बहना, आंखों का चिपकना आदि रोग दूर होते हैं।

नेत्रों की रक्षा के लिये

नाग ज्योति प्रयोग करें

मुरारी ब्रदर्स
कमला नगर, देहली-७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक विचारधारा प्रसार
के लिए

"जन -- ज्ञान -- प्रकाशन"

के

आकर्षक साहित्य
का
सचो पत्र

अधिक से अधिक साहित्य
वितरण कर महर्षि का
लक्ष्य पूरा करने में
सहयोग दीजिए

देश के साथ चौथाई धन अवश्य भेजें। अपने निकट के रेलवे स्टेंशन का नाम अवश्य लिखें

व्यवस्थापक

जन-ज्ञान-प्रकाशन

१५९७ हरध्यानसिंह रोड, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'वेद' का ज्ञान फलाना हमारा परमधम है। तो आइए, इस परमधर्म की पूर्ति के लिए यह ट्रैक्ट प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने का निश्चय कीजिए।
रंगीन आवरण। बढ़िया कागज १०) सैकड़ा। ७०) हजार।

वेद का सन्देश फैलाएँ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

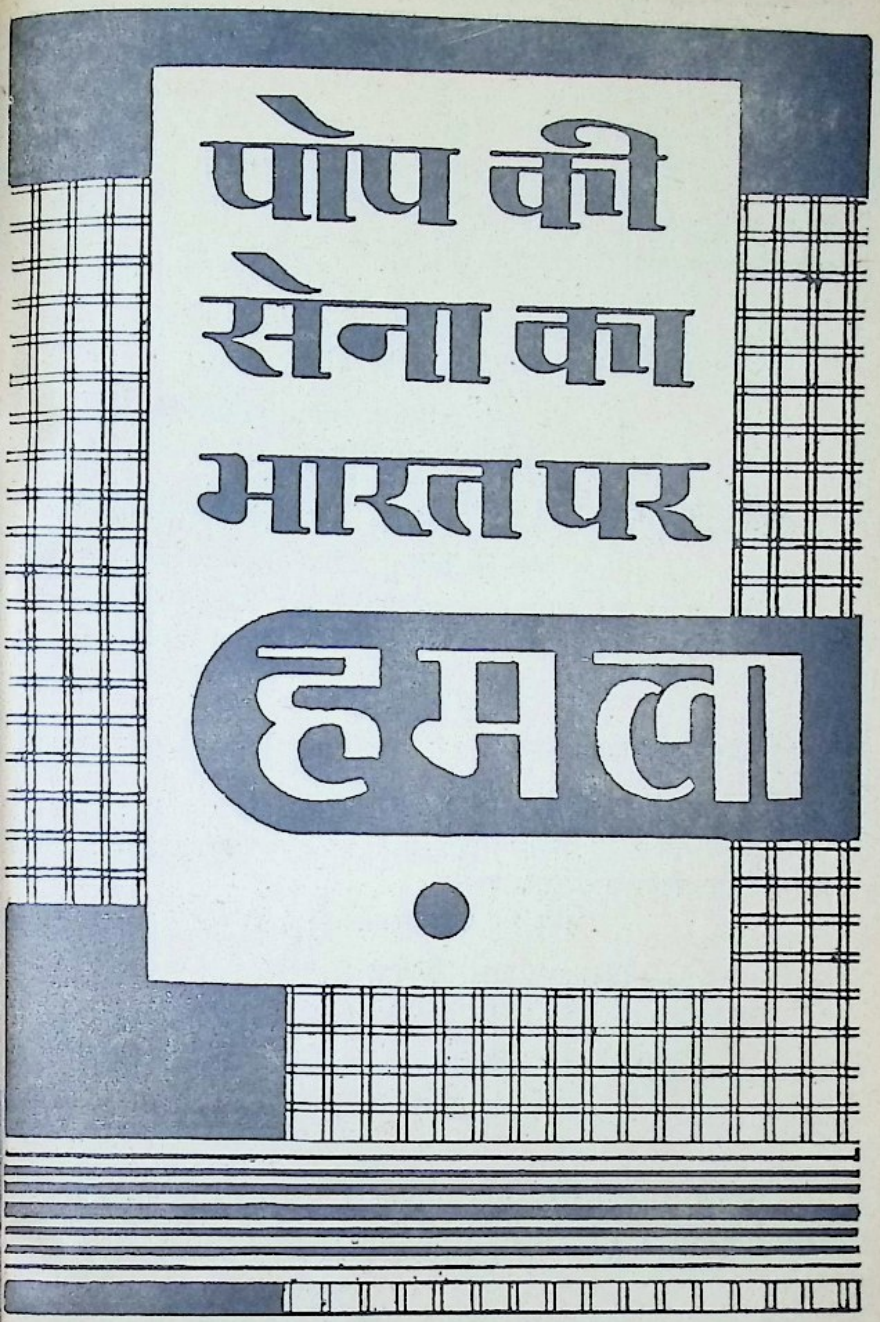

विदेशी पादरी भारत को ईसालैंड बनाना चाहते हैं। संपूर्ण षड़यन्त्र का प्रभावशाली भंडाफोड़। मूल्य १०) सैकड़ा। ७०) हजार।

हमले का उत्तर ही देश को बचाएगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईसाई पादरी

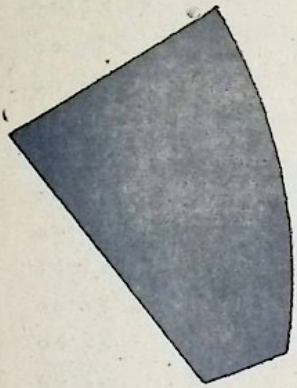

उत्तर दें

अमर शहीद
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
के

३६ प्रश्न

विदेशी पादरियों की जड़ें हिलाने वाला प्रभावशाली ट्रैक्ट

दो रंगे आवरण में

मूल्य २५) हजार। ३) सैकड़ा।

अब तक लाखों हाथों में पहुँचा है। आप भी पहुँचाएँ

देश को बचाएँ

मुद्रक—प्रकाशक-सम्पादक, श्रीमती राकेशरानी के लिए "जय भारती" प्रेस में मुद्रित और "जन-ज्ञान" कार्यालय १५९७ हरध्यानसिंह रोड, करोल बाग, द्वारा प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

जिन्होंने जीवन भर अपनी लेखनी से वेद का पावन संदेश प्रसारित किया। कोटिशः प्रणाम।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईसाई पादरी

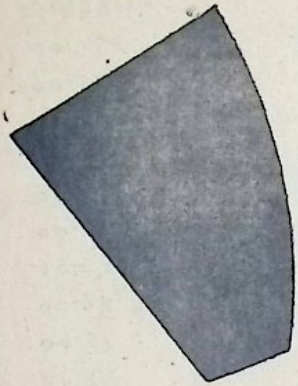

उत्तर दें

अमर शहीद
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
के

३६ प्रश्न

विदेशी पादरियों की जड़ें हिलाने वाला प्रभावशाली ट्रैक्ट

दो रंगे आवरण में

मूल्य २५) हजार। ३) सैकड़ा।

अब तक लाखों हाथों में पहुँचा है। आप भी पहुँचाएँ

देश को बचाएँ

मुद्रक—प्रकाशक-सम्पादक, श्रीमती राकेशरानी के लिए "जय भारती" प्रेस में मुद्रित और "जन-ज्ञान" कार्यालय १५६७ हरध्यानसिंह रोड, करोल बाग, द्वारा प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

जिन्होंने जीवन भर अपनी लेखनी से वेद का प्रचुर संदेश प्रसारित किया। कोटिशः प्रणाम।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जन-ज्ञान' मासिक
१५६७, हरध्यान सिंह रोड,
नई दिल्ली-५

जनवरी १९६९

Regd. No.
D. 1631

जब भी आप को निम्न वस्तुओं की आवश्यकता हो—
आप कृपया २७५१२४ पर फोन कीजिए

१. डालिमा बिस्कुट — Dalima Biscuits
२. ओवो माल्ट — Ovo Malt
३. मिल्कोटीन — Milkotine
४. कैवेन्टर्स मिल्क केक — Keventer's Milk Cake
५. टिन्ड मक्खन — Tinned Butter

निर्माता :
PATIALA BISCUITS MFG. PVT. LTD.
FOOD, FATS & FERTILISERS LTD.
(Milkotine & Ovomalt)
EDWARD KEVENTER (Successors) PVT. LTD.

दिल्ली के लिए एक मात्र वितरक :—

KAPOOR BROTHERS
Agents : Patiala Biscuit Mfrs. Private Ltd., Rajpura (Pb.)
34-E, Vikram Nagar, Kotla Feroz Shah,
NEW DELHI-1.

क पू र ब्र द र्स
३४-ई, विक्रम नगर, कोटला फिरोज शाह, नई दिल्ली-१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi